

खेती संदेश

Postage Registered No. PB/PTA/0339/2025-2027

WEEKLY KHETI SANDESH

E-mail : khetisandesh2025@gmail.com

Chief Editor : Parminder Kaur • RNI Regd. No. PBBIL/25/A0210 • Issue Dt. 30-03-2026 • Vol.2 No.13 • H.O. : # 9-A, Ajit Nagar, Patiala-147001 (Pb.) • Mob. 90410-14575 • Page 12

कृषि एवं कृषि संबंधित विषयों पर
आधुनिक जानकारी लेने हेतु पढ़ें

खेती संदेश

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

मार्च माह में लगे
किसान मेलों के अवसर पर
किसान भाईयों के उत्साह को देखते हुए
चंदों पर विशेष छूट

एक वर्ष
250/-
रुपए

दो वर्ष **450/-** रुपएतीन वर्ष **650/-** रुपएKHETI DUNIYAN
TID - 62763351

चंदे भेजने हेतु QR कोड स्कैन करें।

कृषि एवं कृषि सहायक
धंधों की आधुनिक
जानकारी से भरपूर

एक वर्ष में
52 अंक

पेमेंट करने के पश्चात् अपना डाक पता इस नंबर पर भेजें :



90410-14575

* यह स्कीम 30 अप्रैल, 2026 तक लागू है।

पंजाब में पहले धान नष्ट हुआ, फिर गेहूं का रकबा घटा

पंजाब में बारिश कम होने से गेहूं का उत्पादन 177 लाख मीट्रिक टन तक रहने के आसार

पंजाब में पिछले साल आई बाढ़ का असर एक साल बाद भी दिखाई दे रहा है। पहले बाढ़ ने धान और बासमती की फसल को भारी नुकसान पहुंचाया, फिर गेहूं की बुवाई के लिए जमीन तैयार नहीं हो सकी। न ही जरूरत के अनुसार बारिश हो पाई। अब इसका असर 2025-26 के सीजन में गेहूं के उत्पादन पर दिखाई दे रहा है। राज्य के कृषि विभाग की ओर से ग्राउंड लेवल पर किए गए क्रॉप सर्वे में सामने आया है कि भले ही मार्च के अंतिम दिनों में बारिश गेहूं की फसल के लिए लाभदायक रही है, लेकिन पूरे सीजन में बारिश

साल प्रति हैक्टेयर 5300 किलो गेहूं उत्पादन था, लेकिन इस बार 5088 किलो गेहूं उत्पादन रहने की संभावना है। 2024-25 में



जारी कर दी है। गेहूं कटाई का काम शुरू हो जाएगा।

**बढ़ेगा किसानों पर
आर्थिक दबाव**

उत्पादन घटने का सीधा असर किसानों की आय पर पड़ेगा। पहले धान की फसल में नुकसान, फिर गेहूं की कम उपज कारण हुई दोहरी मार ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ा दिया है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि आने वाले समय में सिंचाई प्रबंधन, जल निकासी प्रणाली और मिट्टी सुधार कार्यक्रमों पर तेजी से काम नहीं किया गया तो आने वाले सीजन में भी असर जारी रह सकता है।

पंजाब में बाढ़ से धान व बासमती सहित विभिन्न फसलों का करीब 1.93 लाख हैक्टेयर रकबा नष्ट हो गया था। इसका असर यह रहा कि 25 हजार

क्या असर पड़ेगा?

उत्पादन 212 किलो
प्रति हैक्टेयर घटेगा

रकबा	
2024-25	35.13
2025-26	34.88
(लाख हैक्टेयर में)	
उत्पादन	
2024-25	188
2025-26	177
(उत्पादन लाख टन में)	
प्रति हैक्टेयर	
2024-25	5300
2025-26	5088
(उत्पादन किलो में)	

कम होने से इस बार गेहूं के उत्पादन में गिरावट का असर दिखेगा। कृषि विभाग के अनुसार पंजाब में पिछले साल 2024-25 के मुकाबले इस साल 2025-26 में प्रति हैक्टेयर 212 किलो गेहूं उत्पादन घट सकता है। पिछले

गेहूं का कुल उत्पादन 188 लाख मीट्रिक टन था। 2025-26 में कुल उत्पादन 177 लाख मीट्रिक टन तक सिमट सकता है। हालांकि, इसके कई कारण बताए जा रहे हैं। कृषि विभाग के डायरेक्टर गुरजीत सिंह बराड़ ने कहा कि लगातार मौसम मदल रहा है,

कुछ इलाकों में देरी से हुई गेहूं की बुवाई

असामान्य तापमान, बाढ़ के बाद की स्थितियां और मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट जैसे कारण गेहूं के उत्पादन को प्रभावित कर रहे हैं। इस वजह से इस सीजन में गेहूं के उत्पादन में घाटे की संभावना है। हालांकि, एक सप्ताह पहले पंजाब में हुई बारिश गेहूं के लिए लाभदायक मानी गई है। इससे गेहूं के उत्पादन में कुछ राहत रहेगी, लेकिन अगर समय रहते कृषि उपायों से नहीं रोका गया, तो इसका असर किसानों और खाद्य आपूर्ति भी पड़ सकता है। बारिश कम होने से गेहूं के पौधों की वृद्धि प्रभावित होती है। इससे उत्पादन घट सकता है। पिछले वर्ष बाढ़ के चलते खेतों में तलछट व सेलेशन फैलने से कृषि योग्य जमीन पर असर पड़ा है। कुछ इलाकों में बुवाई में देरी और मिट्टी की गुणवत्ता घटने जैसी समस्याएं देखी गईं।

— डॉ. गुरविंदर सिंह, कृषि विशेषज्ञ

जिसका असर फसलों पर भी पड़ रहा है। मार्च के अंतिम दिनों में हुई बारिश गेहूं के लिए राहत भरी रही है। पंजाब में 1 अप्रैल से गेहूं की सरकारी खरीद शुरू हो रही है। केन्द्र सरकार ने 33 हजार करोड़ की सीसीएल भी

हैक्टेयर रकबा गेहूं बुवाई के लिए तैयार ही नहीं हो पाया। इस वजह से गेहूं का रकबा घट गया। 2024-25 में गेहूं का रकबा 35.13 लाख हैक्टेयर था, लेकिन 2025-26 में 34.88 लाख हैक्टेयर रकबे में ही गेहूं बुवाई हो पाई है।

चीन में चाय बागानों में पत्तियां तोड़ रहे ह्यूमनॉयड रोबोट



यह किसी विज्ञान कथा फिल्म का दृश्य नहीं है। चीन के हुबेई प्रांत के हुआंगगांग में चाय बागान में इंसान जैसे दिखने वाले रोबोट चाय की पत्तियां तोड़ने में मदद कर रहे हैं। चाय के सीजन में, कई बागानों को चाय तोड़ने वालों की कमी का सामना करना पड़ता है। ऐसे में रोबोट एक लोकप्रिय वैकल्पिक समाधान के रूप में उभर कर सामने आए हैं। ए.आई.-संचालित रोबोटों का उपयोग पूरे चीन में कृषि क्षेत्रों में तेजी से किया जा रहा है।

गतांक से आगे

* जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करना : फसल विविधीकरण को बढ़ावा देती है, जल दक्षता बढ़ाती है और सूखा-प्रतिरोधी फसल प्रकारों को एकीकृत करती है, जो जलवायु परिवर्तन के विघटनकारी प्रभावों को कम करने में मदद करती है।

* जलवायु संबंधी खतरों और झटकों के जोखिम को कम कर लघु मौसम अवधि एवं अनियमित मौसम पैटर्न जैसे दीर्घकालिक तनावों का सामना करने में प्रत्यास्थता को बढ़ाती है।

भारत में जलवायु स्मार्ट कृषि के समक्ष विद्यमान प्रमुख चुनौतियां

* जागरूकता और ज्ञान की कमी : नई कृषि पद्धतियों को अपनाने में यह एक आम चुनौती है। किसानों और विस्तार कार्यकर्ताओं (Extension Workers) के बीच के लाभों या इन अभ्यासों को प्रभावी ढंग से लागू करने के तरीके के बारे में जानकारी की कमी हो सकती है।

* वित्त, बीमा और बाजार



तक सीमित पहुंच : किसानों के लिये जुड़ी नई तकनीकों एवं अभ्यासों में निवेश कर सकने के लिये वित्तपोषण महत्वपूर्ण है। वित्त, बीमा और बाजार तक पहुंच की कमी को अपनाने में बाधक सिद्ध हो सकती है।

* अपर्याप्त अवसंरचना और संस्थागत समर्थन : इसकी सफलता सहायक अवसंरचना और संस्थानों पर निर्भर करती है। इसमें सिंचाई प्रणालियां, भंडारण सुविधाएं और विभिन्न संगठन शामिल हैं जो सहायता एवं मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

* उच्च लागत और जोखिम : नई प्रौद्योगिकियों और अभ्यासों को अपनाने से संबंधित आर्थिक लागत किसानों के लिये एक महत्वपूर्ण बाधा सिद्ध हो सकती है। इसके अतिरिक्त, जोखिम की आशंका भी इसे अपनाने से हतोत्साहित कर सकती है।

* नीति और नियामक बाधाएं : जो नीतियां का समर्थन या प्रोत्साहन नहीं करती, वे एक बड़ी बाधा सिद्ध हो सकती हैं। नियामक बाधाएं भी अभ्यासों के विस्तार की गति को मंद कर सकती हैं।

जलवायु-स्मार्ट कृषि को बेहतर ढंग से अपनाने के लिये कौन-से उपाय किये जाने चाहिये?

* क्षमता निर्माण और जागरूकता : प्रशिक्षण, प्रदर्शन, किसानों का परस्पर संपर्क और

क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर - एक उभरता आयाम



डॉ. रवि किरण, प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष (कृषि मौसम विज्ञान), कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, गोविन्द बल्लभ पंत, कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर-263145 (उधम सिंह नगर, उत्तराखंड)

मास मीडिया के माध्यम से के सिद्धांतों एवं अभ्यासों पर किसानों और विस्तार कार्यकर्ताओं की क्षमता एवं जागरूकता की वृद्धि करना।

के बीच नवाचार और सहकार्यता को बढ़ावा देना, जैसे कि भागीदारीपूर्ण अनुसंधान में किसानों को शामिल करना, सार्वजनिक-निजी भागीदारी का सृजन करना और बहु-हितधारक मंचों की सुविधा प्रदान करना।

जलवायु-स्मार्ट कृषि के लिये प्रमुख पहलें

* राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन कोष (National Adaptation Fund for Climate Change), जलवायु प्रत्यास्थीधुनम्य कृषि पर राष्ट्रीय नवाचार मृदा स्वास्थ्य मिशन (Soil Health Mission), प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, परंपरागत कृषि विकास योजना, बायोटेक-किसान (Biotech & KISAN) और जलवायु-स्मार्ट ग्राम (Climate Smart Village) भारत में पर केंद्रित सरकारी पहलों के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं।

* विभिन्न सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की संस्थाएं, जैसे किसान-उत्पादक संगठन (FPOs) और गैर-सरकारी संगठन (NGOs) भी को अपनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।



* जलवायु परिवर्तन, कृषि और खाद्य सुरक्षा (Climate Change) Agriculture and Food Security & CCAFS) पर CGIAR अनुसंधान कार्यक्रम, जो अनुसंधान संगठनों की एक वैश्विक साझेदारी है, खाद्य सुरक्षा, गरीबी और जलवायु परिवर्तन की परस्पर

संबद्ध चुनौतियों के समाधान का उद्देश्य रखता है।

* विश्व समूह, जो विकासशील देशों में परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों के समर्थन के लिये ऋण, अनुदान एवं तकनीकी सहायता प्रदान करता है।

* जलवायु-स्मार्ट कृषि पर वैश्विक गठबंधन (Global Alliance for Climate & Smart Agriculture & GA), जो एक स्वैच्छिक मंच है, के संबंध में ज्ञान साझेदारी, नीति संवाद और निवेश की सुविधा के लिये सरकारों, नागरिक समाज, किसानों, अनुसंधान संस्थानों और निजी क्षेत्र को एक साथ लाता है।

* 'क्लाइमेट-स्मार्ट एग्रीकल्चर यूथ नेटवर्क' (YN), जो विभिन्न देशों के युवाओं का एक समूह है जो युवाओं और अन्य हितधारकों के बीच जागरूकता एवं कार्यवाई को बढ़ावा दे रहा है।

निष्कर्ष

जलवायु-स्मार्ट कृषि में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, किसानों को सशक्त बनाने और नवाचार, प्रत्यास्थता एवं संवहनीयता को

जलवायु-अनुकूल कृषि पद्धतियां

सटीक खेती कुछ बेहतरीन कृषि ऐप्स सटीक खेती की सुविधा देते हैं, जिसमें मिट्टी और फसलों के स्वास्थ्य की निगरानी के लिए IoT सेंसर और GPS तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। इस तरीके से, किसान जहां जरूरी हो, वहाँ पानी, खाद और कीटनाशकों की सटीक मात्रा उपलब्ध करा पाते हैं।

कृषि-वानिकी

कृषि-वानिकी एक ऐसी कृषि भूमि है जिसमें पेड़ और झाड़ियाँ भी शामिल होती हैं। पेड़ों को शामिल करने से जैव विविधता बढ़ती है, मिट्टी का स्वास्थ्य बेहतर होता है, और फसलें खराब मौसम से सुरक्षित रहती हैं।

सूखा-रोधी फसल किस्में

ऐसी फसलें विकसित करना जो सूखे और ज्यादा तापमान को झेल सकें, किसानों को खराब जलवायु परिस्थितियों में भी स्थिर पैदावार देने में मदद करता है।

शून्य जुताई

इसमें मिट्टी को बिना छेड़े बीज बोए जाते हैं। इससे मिट्टी में नमी बनी रहती है, कटाव कम होता है, और मिट्टी की संरचना भी ठीक रहती है।

स्मार्ट सिंचाई प्रणालियां

ड्रिप सिंचाई जैसी जलवायु-अनुकूल सिंचाई तकनीकें पानी को सीधे पौधों की जड़ों तक पहुँचाकर पानी की खपत कम करती हैं, जिससे पानी का बेहतर इस्तेमाल हो पाता है।

चक्रीय चराई

पशुओं को अलग-अलग चरागाहों में बारी-बारी से ले जाया जाता है, जिससे घास-फूस को फिर से उगने का समय मिल जाता है। इस तरह, स्वस्थ चरागाहों में मिट्टी की गुणवत्ता बेहतर बनी रहती है।

एकीकृत कीट प्रबंधन

जैविक नियंत्रण के साथ-साथ रसायनों का कम इस्तेमाल यह सुनिश्चित करता है कि यह एक पर्यावरण-अनुकूल तरीका है, जो फसलों के लिए भी फायदेमंद है।

आवरण फसल

जमीन की सुरक्षा करने, मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने और नाइट्रोजन स्थिरीकरण के जरिए मिट्टी के कटाव की दर को कम करने के लिए फलीदार पौधे या क्लोवर जैसी आवरण फसलें बोई जा सकती हैं।

कम्पोस्ट और जैविक खाद

ये जैविक खादें रसायनों पर निर्भरता कम करती हैं और मिट्टी का स्वास्थ्य बेहतर बनाती हैं, जिससे टिकाऊ कृषि को बढ़ावा मिलता है।

डिजिटल जलवायु सेवाएं

मौसम का पूर्वानुमान, जलवायु संबंधी सलाह और खेती से जुड़ी खास जानकारी वेबसाइटों और मोबाइल ऐप्स के जरिए किसानों तक पहुंचाई जाती है, ताकि वे सही फैसले ले सकें।

जलवायु-अनुकूल कृषि की ये सभी तकनीकें टिकाऊ कृषि

खरपतवार दुनिया भर में कृषि उत्पादन के सामने सबसे चुनौतीपूर्ण समस्याओं में से एक है। खरपतवारों के कारण फसल की उपज में 30 प्रतिशत से अधिक की हानि होती है। परिणामस्वरूप खरपतवार प्रबंधन के लिए भारी मात्रा में लोग सिंथेटिक शाकनाशियों का प्रयोग करते हैं, जिसका दुष्प्रभाव न सिर्फ हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है, अपितु हमारा पर्यावरण भी दूषित होता है। शाकनाशियों पर निर्भरता को कम करने के लिए एलेलोपैथी का प्रयोग एक व्यावहारिक समावेश हो सकता है। रासायनिक खरपतवार के प्रबंधन के लिए फसल - खरपतवार के बीच हो रही पारस्परिक क्रिया को एलेलोपैथी की मदद से आसानी से समझा जा सकता है।

एलेलोपैथी एक ऐसी जैविक प्रक्रिया है, जिसमें एक जीव कुछ प्रकार के विशिष्ट रसायनों का उत्पादन करता है, जो अन्य जीवों के अंकुरण विकास अस्तित्व और प्रजनन को प्रभावित करते हैं। पूर्व में वैज्ञानिकों द्वारा ऐसे कई पौधों के विषय में बताया गया है, जिनके अंदर एलेलोपैथिक गुण हैं, जैसे एस्ट्रेसी फैमिली की कई प्रजातियां, यूकेलिप्टस की छाल पत्तियां एवं जड़ में भी एलेलोपैथिक गुण देखे गए हैं। गेहूं और चावल की कुछ किस्म जिनमें खरपतवार पौधों की वृद्धि को बाधित करने की क्षमता है। वैज्ञानिकों द्वारा शोध में पाया गया की फसल और खरपतवार दोनों में ही एलेलोपैथी गुण होते हैं। खरपतवार सभी क्षेत्रों में चाहे



मदार खरपतवार है औषधीय एवं एलेलोपैथिक गुणों का भंडार

दीक्षा मोर्य, निहाल द्विवेदी, डॉ. प्रियंका सूर्यवंशी, फसल उत्पादन एवं सुरक्षा विभाग, सी.एस.आई.आर.-केन्द्रीय औषधीय एवं सुगंध पौधा संस्थान, लखनऊ

एक सदाबहार बारहमासी झाड़ी है, जो मुख्य रूप से शुष्क और अर्ध शुष्क क्षेत्र में पाया जाता है। कैलोट्रोपिस प्रॉसेरा की ऊंचाई आमतौर पर 6 फीट से 8 फीट तक हो सकती है। यह अशांत स्थलों जैसे सड़क के किनारे रेलवे लाइन, रेत के टीलों, घास के मैदानों का खरपतवार है। इसका तना भूरे रंग का एवं इसकी पत्तियां मोमी होती हैं, जिसमें सफेद दुधिया रस लेटेस्ट निकलता है। इसके फूल गुच्छे में लगते हैं तथा सफेद रंग के होते हैं, जिसका सिरा बैंगनी होता है। प्रत्येक फूल में पांच पंखुड़ियां होती हैं, जिसके ऊपर

एल. सेटेरिया इटालिका (एल.) पी.ब्यूव., और ब्रैसिका रैपा एल.। सी. प्रोसेरा के पत्ते, फल और फूल के अर्क ने ब्रैसिका क्रेटिका लैम में अंकुरण, मूलांकुर की लंबाई, प्लम्यूल की लंबाई, बायोमास संचय और सापेक्ष जल सामग्री को महत्वपूर्ण रूप से बाधित किया।

एलेलोपैथी : एलेलोपैथी शब्द हंस मालिश द्वारा (1937) में दिया गया एलेलोपैथी दो ग्रीक शब्दों से बना है 'एलेलोन' जिसका अर्थ है एक दूसरे का और 'पैथोस' का अर्थ है पीड़ित होना। एलेलोपैथी एक प्राकृतिक घटना है, जिसमें एक जीव अपने आसपास के अन्य जीवों पर कुछ प्रकार के

एलेलोकेमिकल्स द्वितीयक मेटाबोलिक के उत्सर्जन के माध्यम से नकारात्मक या सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। उच्च पौधों द्वारा उत्सर्जित मेटाबोलिक्स के अंदर फाइटोटॉक्सिक गुण होते हैं, जो खरपतवार नियंत्रण में पर्यावरण के अनुकूल एक व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं। एलेलोपैथी पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं और रासायनिक शाकनाशी से होने वाले दुष्प्रभाव को कम करने के लिए एक आशाजनक समाधान बन सकती है। इस प्रक्रिया की मदद से हम जैविक शाकनाशी का उत्पादन कर सकते हैं, जिन्हें बायो हर्बसाइड्स कहा जाता है।

एलेलोकेमिकल्स : एलेलोपैथिक पौधे एलेलोकेमिकल्स एवं सेकेंडरी मेटाबोलाइट्स के उत्पादन के माध्यम से पड़ोसी पौधों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं और उनके विकास को प्रभावित करते हैं आमतौर पर रासायनिक समानताओं के आधार पर एलेलोकेमिकल्स को अलग-अलग समूह में वर्गीकृत किया जाता है जिसमें अल्कलॉइड, फ्लेवोनोंड, फेनोल्स टैनिन, कीटोन और फैटी एसिड शामिल हैं। कैलोट्रोपिस के

शेष पृष्ठ 6 पर



वह फसल भूमि हो या गैर फसल भूमि, जैसे की कोई औद्योगिक स्थल - सड़क, रेल लाइन के किनारे आदि जगहों पर बड़ी ही आसानी से उग जाते हैं और अन्य वंचित वनस्पति के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। मगर इनमें से कुछ खरपतवार ऐसे भी हैं जो एलेलोपैथिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं और ऐसा ही एक खरपतवार है मदार।

मदार के नाम से जाना जाने वाला यह पौधा कैलोट्रोपिस परिवार एपोसिनेसी एवं उप-परिवार एस्क्लेपिडेसी का सदस्य है। इसकी दो मुख्य प्रजातियां कैलोट्रोपिस प्रॉसेरा एवं जाएजयंटिया हैं।

इसे आमतौर पर, आक, एण्ड ऑफ सोडियम, स्मॉल क्राउन फ्लावर और मिल्क विड आदि नामों से भी जाना जाता है। यह दक्षिणी एशिया और उत्तरी अफ्रीका का मूल निवासी है।

उत्पत्ति और वितरण : यह

एक मुकुट जैसा केन्द्र होता है, जिसे कोरोना कहते हैं।

औषधीय एवं फाइटो-टॉक्सिक गुण : मदार के विभिन्न हिस्सों में एंटीहेलमिंथिक और एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं, जो तमाम त्वचा के रोगों को ठीक करने में मदद करते हैं। मदार की फाइटोटॉक्सिसिटी का परीक्षण कई फसल और खरपतवार प्रजातियों के खिलाफ भी किया गया है। जमीन के ऊपर के पौधे के अर्क से जौ (होर्डियम वल्गारे एल.), गेहूं (ट्रिटिकम एस्टिवम एल.), मेथी (ट्राइगो-नेला फोनम-ग्रेकम एल.), टमाटर (सोलनम लाइकोप-र्सिकम एल.), बैंगन (सोलनम मेलोजेना एल.), सेना ओक्सीडेंटलिस (एल.), में बीज के अंकुरण और वृद्धि में रुकावट देखी गई। खरपतवार की कई प्रजातियां जैसे कि चीनोपोडियम मोरेल एल., पेनसेटम ग्लौकम (एल.), सेटेरिया इटालिका (एल.) पी.ब्यूव. और ब्रैसिका रैपा



No. 1
RURAL WEEKLY

Now Think Before Advertising
KHETI DUNIYAN RETAINS LEADERSHIP IN READERSHIP



KHETI DUNIYAN
VOICE OF THE FARMERS

KD COMPLEX, GAUSHALA ROAD, NEAR SHER-E-PUNJAB MARKET, PATIALA-147001 (PB.) INDIA
Mob. 90410-14575
khetiduniyan1983@gmail.com

खेती संदेश

KHETI SANDESH

मुख्य कार्यालय :
9-ए, अजीत नगर,
पटियाला-147001
(पंजाब)
मो. 98151-04575

कार्पोरेट कार्यालय :
के.डी. कॉम्प्लेक्स, गरुशाला रोड,
नजदीक शोरे पंजाब मार्केट,
पटियाला-147001
(पंजाब)
मो. 90410-14575

वर्ष : 02 अंक : 13
तिथि : 30-03-2026

सम्पादक

परमिंदर कौर

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग
डॉ. जे.एस. डाल
डॉ. आर.एम. फुलझेले

Editor : PARMINDER KAUR
Printer, Publisher and Owner of Weekly
'KHETI SANDESH' Printed at Dristi Printers,
Dasmesh Market, Near Sher-e-Punjab Market,
Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) and
published from Kheti Sandesh, House No. 9-A, Ajit Nagar,
Patiala-147001 (Pb.). E-mail : khetisandesh2025@gmail.com
Mob. 90410-14575, RNI No. PBBIL/25/A0210

मृदा की स्वस्थ रखने के विकल्प एवं प्रबंधन

बीसवीं सदी की हरित क्रांति ने भारत में खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। उन्नत किस्में, उन्नत सस्य क्रियाएं, रासायनिक उर्वरक व पौध सुरक्षा के लिए रसायनों के उपयोग से प्रारंभ में फसल उत्पादन में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई। परंतु विगत कुछ दशकों से उत्पादन एक स्तर पर रुक गया है तथा इसकी आगामी बढ़ोत्तरी होना मुश्किल है। इस रुकने हुए उत्पादन स्तर का प्रमुख कारण रसायनों के अंधाधुंध उपयोग से मृदा की गुणवत्ता में आई गिरावट है।

मृदा एक जीवित निकाय है, जिसके प्रभावित जैविक, रासायनिक व भौतिक गुण धर्म होते हैं इस में से किसी भी एक गुण धर्म में हुआ परिवर्तन मृदा की उपजाऊ शक्ति को प्रभावित करता है। रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग, लवणीय व क्षारीय पानी द्वारा सिंचाई व उद्योगों अथवा सीवरेज अपशिष्टों का खेतों में समावेश जैसे मुख्य कारक हैं, जो मृदा के मूलभूत गुणों को परिवर्तित कर देते हैं तथा उपजाऊ क्षमता को क्षीण कर देते हैं। इसी के साथ किसानों द्वारा रासायनिक उर्वरकों को जैविक खादों पर प्रधानता देने से मृदा में उपस्थित लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में भारी कमी आ गई है। उपरोक्त सभी कारणों से हरियाणा प्रदेश की मिट्टी अस्वस्थ श्रेणी में आ गई है।

मृदा स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक :-

1. औद्योगीकरण एवं शहरीकरण।
2. कृषि रसायनों का अनियंत्रित उपयोग।
3. सिंचाई के साधनों का अवैज्ञानिक प्रयोग।
4. संघन खेती।
5. जैविक खादों का अनुपयोग।
6. रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित मात्रा में प्रयोग।

मृदा स्वास्थ्य में क्षरण से होने वाले दुष्प्रभाव :-

- * मनुष्यों व जानवरों के स्वास्थ्य में गिरावट।
- * भूमिगत व सतहीजल की गुणवत्ता में नुकसान कारक बदलाव।
- * खाद्य श्रृंखला में विषाक्त तत्वों का प्रवेश।
- * फसल उत्पादन और उत्पादकता में गिरावट।
- * मृदा जैव विविधता में कमी।

खेत की मिट्टी में उपस्थित कार्बनिक पदार्थ (जैव कार्बन) मृदा के स्वस्थ होने के सूचक होते हैं। परंतु कृषि के रसायनों का अंधाधुंध प्रयोग,



मृदा एक जीवित निकाय है, जिसके प्रभावित जैविक, रासायनिक व भौतिक गुण धर्म होते हैं इस में से किसी भी एक गुण धर्म में हुआ परिवर्तन मृदा की उपजाऊ शक्ति को प्रभावित करता है। रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग, लवणीय व क्षारीय पानी द्वारा सिंचाई व उद्योगों अथवा सीवरेज अपशिष्टों का खेतों में समावेश जैसे मुख्य कारक हैं, जो मृदा के मूलभूत गुणों को परिवर्तित कर देते हैं तथा उपजाऊ क्षमता को क्षीण कर देते हैं। इसी के साथ किसानों द्वारा रासायनिक उर्वरकों को जैविक खादों पर प्रधानता देने से मृदा में उपस्थित लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में भारी कमी आ गई है। उपरोक्त सभी कारणों से हरियाणा प्रदेश की मिट्टी अस्वस्थ श्रेणी में आ गई है।

जैविक खादों की अनदेखी, अवैज्ञानिक तरीके से सिंचाई, एक ही रासायनिक उर्वरक का लगातार प्रयोग आदि कई कारण हैं जिसकी वजह से मृदा स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हुआ है।

मृदा को स्वस्थ रखने के विकल्प एवं प्रबंधन कार्यनीति

समंविता पोषक तत्व प्रबंधन :- किसानों को एक ऐसी पादप पोषक व्यवस्था बनानी होगी, जिस में पोषक तत्वों की उपलब्धता के लिए प्राकृतिक कार्बनिक पदार्थ, जैविक एवं कृत्रिम रूप से संश्लेषित रासायनिक स्रोतों का समुचित और संतुलित समंविता किया जा सके। मृदा स्वास्थ्य एवं बढ़ती आबादी के भरण पोषण दोनों तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, इन तीनों स्रोतों का उचित अनुपात में उपयोग अनिवार्य है। प्राकृतिक खादों से पौधों को पोषक तत्व के साथ मृदा में भी कार्बन उपलब्ध होता है, जो सूक्ष्म जीवों के लिए ऊर्जा का स्रोत है। जैव उर्वरक या जीवाणु खाद जीवित उर्वरक हैं जिस में वांछित सूक्ष्म जीव विद्यमान होते हैं, जो प्राकृतिक रूप से पौधों का पोषण करते हैं।

जीवाणु खाद के प्रकार:

1. नाइट्रोजन यौगिकी

करण करने वाले :- राइजोबियम (दलहनी फसलों में) एजोटो बैक्टीरिया, एजोस्पाइरिलम, एसीटोबैक्टीर आदि (आनाज वाली फसलों)।

2. फास्फोरस घुलनशीलता के लिए :- स्त्र्यूडोमोनास, एसर्पजिलस, पैनिंसिलियम, बैसिलस आदि।

3. पोटेश घुलनशीलता के लिए :- बैसिलस, एसीटोबैक्टीर।

इन्हीं दोनों स्रोतों के साथ-साथ रासायनिक उर्वरक



आज भी पोषक तत्वों के मुख्य स्रोत हैं तथा बढ़ती आबादी को ध्यान में रखते हुए इनका दूसरा विकल्प भी नहीं है। अतः रासायनिक उर्वरकों का संतुलित व वैज्ञानिक तरीके से उपयोग भी समंविता पोषक तत्व प्रबंधन प्राणाली का अहम घटक है। समंविता पोषक तत्व प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य सही समय पर पोषक तत्वों को सही मात्रा में प्रदान करना है और साथ ही साथ कृषि लागत

में उल्लेखनीय कमी लाना तथा मृदा स्वास्थ्य बनाए रखना है, जिससे फसल उत्पादन ज्यादा लाभकारी व टिकाऊ बन सके।

समंविता कीट व खरपतवार प्रबंधन :- यह एक ऐसी व्यवस्था है जिससे कृषि से संबंधित, विभिन्न परिस्थितियों तथा पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाते हुए नुकसानदायक कीटों, रोगों व खरपतवारों के नियंत्रण की तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। इस व्यवस्था में रसायनों पर निर्भरता कम करने पर बल दिया जाता है, जिस के कारण पर्यावरण भी सुरक्षित रह सके तथा मृदा में रहने वाले सूक्ष्म जीवों का भी अस्तित्व कायम रहे।

सिंचाई व्यवस्था व पानी की गुणवत्ता :- हरियाणा में मुख्य तौर पर सतही सिंचाई पद्धतियां प्रचलित हैं, जो कम प्रभावशाली व मृदा की उर्वरता के लिए नुकसान देह है। हल्की मिट्टी में टपका या फव्वारा विधियों को अपना कर पोषक तत्वों की लीचिंग होने से बचा जा सकता है। सिंचाई के पानी की गुणवत्ता भी मृदा स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है। अधिक लवणीय व क्षारीय पानी देने से मृदा में अवांछित तत्वों का समावेश व एकत्रण हो जाता है तथा वांछित तत्व अघुलनशील अवस्था में पहुंच जाते हैं। अतः किसानों को ट्यूबवैल के पानी की जांच साल में एक बार अवश्य करवानी चाहिए तथा अनुमोदित की गई सलाह के अनुरूप ही खेतों में पानी देना चाहिए।

फसल चक्र :- किसानों को मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए दाल वाली फसलों को फसल चक्र

में अवश्य शामिल करना चाहिए। इन फसलों की जड़ों में गुलाबी गांठें होती हैं और उन गांठों में मौजूद राइजोबिय बैक्टीरिया वातावरण की नाइट्रोजन को मिट्टी में स्थापित करते हैं। धान-गेहूं फसल चक्र में ढ़ैचा या मूंग की फसल को फूल आने की अवस्था में खेत में ही मिला देने से मृदा के भौतिक, रासायनिक व जैविक गुणों में वांछनीय सुधार होता है।

मधुमक्खी मोम (बी-वैक्स)

मधुमक्खी-पालन का एक मूल्यवान उत्पाद

छत्तों के निर्माण के लिए मधुमक्खियों द्वारा पैदा किया जाने वाला मोम, मधुमक्खी-पालन उद्योग का एक मूल्यवान उत्पाद है। यह 14-18 दिन की आयु की कमेरी मधुमक्खियों के द्वारा पैदा किया जाता है, क्योंकि नई कम उम्र की मधुमक्खियों में मोम ग्रन्थियां विकसित नहीं होतीं और पुरानी (3 सप्ताह से अधिक की) मधुमक्खियों में यह ग्रन्थियां समाप्त हो जाती हैं। मोम उदर के चौथे से सातवें खंड के नीचे की ओर विकसित ग्रन्थियों से तरल पदार्थ के रूप में निकलता है और उदर पर स्थित मोम प्लेट्स के ऊपर फैल जाता है। मधुमक्खियां आगे की टांगों से मोमी टुकड़ों को उखाड़ कर मुख तक पहुंचाती हैं, जहां जबड़ों से कुचल कर और लार में मिला कर इसे छत्ते बनाने के काम में लाया जाता है। अनुमानतः एक किलो मोम बनाने के लिए मधुमक्खियां 6-8 किलोग्राम शहद खाती हैं। एक कमेरी मधुमक्खी हर 12 घंटे में मोम के 8 कण बनाती है। एक मोम स्केल का वजन मात्र 1.1 मिलीग्राम होता है अर्थात् एक किलोग्राम मोम में 9,10,000 स्केल होते हैं। मधुमक्खियां मधु स्त्राव

महत्वपूर्ण उपयोग मोमी छत्ता धार के रूप में मधुमक्खी-पालन में ही है। मधुमक्खी मोम के 300 से अधिक औद्योगिक उपयोग हैं। सौन्दर्य प्रसाधन एवं औषधि-उद्योगों में इसका सबसे अधिक विश्व व्यापार का 71 प्रतिशत उपयोग होता है। मधुमक्खी मोम का उपयोग अन्य उद्योगों जैसे कि मोम बत्तियां, जूता पॉलिश, जूता मुरम्मत, कार एवं भवन निर्माण में पॉलिश, कार्बन पेपर, विद्युत एवं कपड़ा उद्योग, धातु ढलाई उद्योग, जल-निरोधन, छपाई, क्रयान, रंगाई, वैज्ञानिक एवं सजावटी मॉडलों, दृष्टि लैन्सों की पोलिशिंग, कैण्डी तथा च्यूंगम, वादन यंत्रों तथा धनुष की प्रत्यन्चा आदि में भी होता है। संगीत वाद्य यंत्रों के निर्माता काष्ठ एवं चर्म पर गढ़न, फिसलन एवं चर्मशोधन गुण स्वभावों के कारण



मोम उदर के चौथे से सातवें खंड के नीचे की ओर विकसित ग्रन्थियों से तरल पदार्थ के रूप में निकलता है और उदर पर स्थित मोम प्लेट्स के ऊपर फैल जाता है। मधुमक्खियां आगे की टांगों से मोमी टुकड़ों को उखाड़ कर मुख तक पहुंचाती हैं, जहां जबड़ों से कुचल कर और लार में मिला कर इसे छत्ते बनाने के काम में लाया जाता है। अनुमानतः एक किलो मोम बनाने के लिए मधुमक्खियां 6-8 किलोग्राम शहद खाती हैं।



और शिशु प्रजनन के दौरान अधिक छत्तों की आवश्यकता पूरी करने के लिए मोम पैदा करती हैं। 15 डिग्री सैल्सियस से ऊपर वातावरण का तापक्रम छत्ते बनाने की क्रिया के अनुकूल होता है।

मौनालय में मोम के विभिन्न स्रोत हैं :

* मौनगृह में खाली स्थानों पर बनाए गए अनउपयोगी छोटे-छोटे छत्ते।

* पुराने लम्बे उपयोग से अनउपयुक्त हुए छत्ते।

* शहद (सील किए गए शहद) से उतारी गई टोपियां।

* बक्सों में तथा जंगली माध्वी द्वारा छोड़ दिए गए छत्ते।

इनमें से शहद की टोपियों से प्राप्त मोम स्वच्छ एवं साफ रंग का होने के कारण सबसे उत्तम होता है। इसके उपरान्त बक्सों की देखभाल के समय हटाए गए फालतू छत्ते भी साफ और अच्छे मोम के स्रोत हैं। पुराने तथा छोड़े गए काले छत्तों से निकाला गया मोम न्यूनतम स्तर का होता है। मोम सामान्यतः शहद के उत्पादन का 2.0 से 2.5 प्रतिशत होता है।

उपयोग : मधुमक्खी मोम के अनेक उपयोग हैं, पर सबसे

इसका प्रयोग करते हैं। मधुमक्खी मोम का उपयोग फलों के जैम, शहद आदि पर संरक्षक-सील के रूप में तथा उद्यानों में पेड़ों की कलम बांधने में भी होता है। मोम का प्रभाव सामान्यतः चिकना और पायस बनाना होता है। ऐतिहासिक काल में मोम का प्रयोग शहद और प्रोपोलिस के साथ मिला कर मृत शरीरों को सुरक्षित करने में भी किया जाता था।

मधुमक्खी मोम का परिष्करण : मोम की गुणवत्ता विशेषतः उत्पादन पद्धति पर निर्भर करती है। छत्तों से मोम साफ करने के पहले उन्हें नीम गर्म पानी में धोना या रात भर पानी में डुबो कर रखना चाहिए, ताकि उसे पराग, शहद एवं सरल गंदगी से मुक्त किया जा सके। छत्तों से मोम को साफ करने के अनेक तरीके हैं :

1. सरलतम गर्म पानी विधि : किसी बड़े बर्तन (भगौने, कनस्तर आदि) में पानी के साथ छत्तों तथा अवशेषों को गर्म करें और लगातार चलाते रहें। जब सभी छत्ते भली-भांति पिघल जाएं, तो उन्हें एक बड़ी बाल्टी या किसी अन्य बर्तन में एक नाईलोन, जूट या मोटे झनैने कपड़े में से

छान दें। गर्म पानी के साथ मोम बर्तन में चला जाएगा और मोम-विहीन अन्य कचरा ऊपर रह जाएगा। कुछ और उबलता पानी उस कचरे पर डाल दें ताकि उसमें बचा अवशेष मोम भी छन जाए। अब इस पानी और मोम को बर्तन में रात भर ठंडा होने दें। सुबह तक मोम ठंडा होकर पानी की सतह पर जम जाएगा और बारीक गंदगी पानी में अथवा मोम के नीचे रह जाएगी। पानी के ऊपर जमे मोम को साफ पानी के साथ पुनः गर्म करें और किसी बारीक झनैने मजबूत कपड़े में से साबुन लगाए हुए भगौनों में छान दें। साबुन के स्थान पर कोई तेल नहीं लगाएं, क्योंकि इससे मोम प्रदूषित हो जाता है। ठण्डा होने के बाद मोम के पिंड को निकाल लें। यदि इसके तल पर कुछ गंदगी रह गई है, तो इसे खुरच कर साफ कर दें।

2. बोरे में डुबोने की विधि : इस विधि में एक जूट के बोरे में सभी मोम के छत्ते और अवशेष भर कर उसका मुंह सख्ती से बांध दें। इस बोरे को किसी गहरे बर्तन में धीमे उबलते पानी में पूरी तरह डुबो दें और उन पर कुछ वजन रख दें। उबलते पानी के साथ छत्तों का मोम पिघल कर पानी की सतह पर एकत्र हो जाएगा। ठंडा होने पर ऊपर आया मोम का पिण्ड अलग कर लें।

3. सूर्य तापी मोम-निष्कासन : इस प्रक्रिया में मोम निष्कासन के लिए सूर्य की गर्मी

का उपयोग किया जाता है। सूर्यतापी मोम-निष्कासन यंत्र एक टिन आदि धातु का आयताकार बक्सा होता है। इस बक्से में सूर्य ताप से 68 से 70 डिग्री सैल्सियस तक गर्मी हो जाती है। ढक्कन के स्थान पर शीशा (या पारदर्शी प्लास्टिक) लगा दिया जाता है। इसकी भीतरी सतहों को अधिकतम ताप शोषण के लिए किसी काले पेन्ट से रंग देते हैं। बीच में छत्तों को रोकने के लिए एक जाली का विभाजक



होता है। नीचे के भाग को एक अलग होने वाली ट्रे के रूप में बनाया जाता है। ऊपर के भाग में छत्तों और अवशेषों को रख कर इसे धूप में रख देते हैं। मोम पिघल कर बहता है और नीचे के भाग के साथ लगी ट्रे में एकत्र हो जाता है और रात में ठण्डा होकर जम जाता है।

4. वाष्प-मोम निष्कासन : इसमें दो टंकियां एक-दूसरे के ऊपर अथवा एक के भीतर दूसरी रहती हैं। ऊपर/भीतर की टंकी से एक नली बाहर निकाल दी जाती है। यह टंकी छिद्रों वाली होती है, ताकि गर्म वाष्प छत्तों तक जा सके। इस टंकी में छत्ते तथा अवशेष रखे जाते हैं। नीचे की अथवा बाहरी टंकी में पानी उबालते हैं, जिसका गर्म वाष्प ऊपर वाली टंकी के मोम को पिघलाता है और वह बाहर जाने वाली नली से बाहर एकत्र कर लिया जाता है।

मोम निष्कासन के समय सावधानियां :

* कभी भी मोम को सीधी लौ अथवा आग पर गर्म ना करें। सदैव पानी के साथ किसी बर्तन में गर्म करें। मोम 62-64 डिग्री सैल्सियस पर पिघल जाता है। 85 डिग्री सैल्सियस से अधिक पर गर्म करने से रंग में भद्दापन आ जाता है और उबालने पर खराब हो जाता है।

* अमेरिकन फाउल ब्रूड (AFB) से प्रभावित छत्तों से कभी भी मोम ना निकालें।

* छत्तों को गर्म करने के लिए हल्का अथवा वर्षा का पानी काम में लाएं। भारी पानी का प्रयोग ना करें।

* मोम अम्लीय होता है, अतः लोहा, पीतल, तांबा, जिंक के बर्तन में गर्म ना करें। सदैव स्टेनलैस स्टील, निकिल या टिन के बर्तन में ही गर्म करें।

* एक ही प्रकार के छत्ते अथवा मोम अवशेष एक साथ मिलाएं। साफ छत्तों/अवशेषों के साथ काले छत्तों को मिलाने से वे भी बदरंग हो जाते हैं।

* अस्वाभाविक गंध रोकने के लिए मोम को शहद, पराग

आदि के साथ गर्म ना करें।

भण्डारण : मोम के पिण्डों को सूखे, अच्छे ठण्डे स्थानों पर ही भण्डारित करें। गैस को कागज में लपेट कर स्टेनलैस स्टील या शीशे या प्लास्टिक के डिब्बों में ही भण्डारित करें। इन सावधानियों के साथ मोम को लम्बे समय तक रखा जा सकता है।

माईट समस्या तथा रोकथाम

डॉ. अभिषेक शुक्ला, कीट विज्ञान विभाग,
न.म. कृषि महाविद्यालय, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी

कृषि में आर्थिक दृष्टि से माईट (वरुथी) का अति विशेष महत्व है। माईट, कीटों के समान ही एक आर्थोपोड जन्तु है। इनमें प्रायः आठ टांगें होती हैं तथा

में विषाणु, कवक आदि रोगों को फैलाने में सहायता करती है। कुछ ईरियोफ्रीड कुल की माईट तो पत्तियों पर गांठें बना कर उनके अंदर रहती है। यहां पर ये बात स्पष्ट

तथा नमी इनकी बढ़वार के लिए उपयुक्त होती है। आज माईट का उपद्रव सब्जियों (भिंडी, बैंगन, खीरा वर्गीय आदि), फलों (आम, चीकू, केला आदि) तथा धान्य (गेहूं, चावल, ज्वार आदि) फसलों में तेजी से बढ़ रहा है।

समन्वित प्रबंधन के कुछ उपाय :

1. फसलों की सही समय पर बुवाई करनी चाहिए।
2. सदैव उचित फसल-चक्र अपनाना चाहिए।
3. माईट प्रतिरोधक किस्मों की बुवाई करनी चाहिए।
4. फसल कटाई के उपरांत खेत की साफ-सफाई करके फसलों के अवशेषों को नष्ट कर देना चाहिए।
5. माईट से ग्रस्त फलियां, टहनियां, फलों आदि को भी समय-समय पर नष्ट करना चाहिए।
6. कभी-कभी छोटे बागों में पौधों को पानी की तेज फुहारों से धोना लाभकारी रहता है, क्योंकि इससे माईट तेज धार के साथ बह जाती है।



इसका शरीर दो भागों में विभक्त होता है, जिसे सिरावक्ष तथा उदर के नाम से जाना जाता है। माईट का जीवन-चक्र तीन भागों में बंटा हुआ होता है, जोकि अंडा, शिशु तथा प्रौढ़ होती है। अधिकतर पादप भक्षी माईट का रंग लाल, भूरा, पीला, गुलाबी अथवा हल्का हरा होता है। माईट के शिशु तथा प्रौढ़ दोनों ही फसलों का अपने मुखांगों से लगातार रस चूसते रहते हैं, जिसके कारण पौधों की बढ़वार रुक जाती है तथा पैदावार में भारी कमी आ जाती है। माईट ग्रस्त पत्तियों पर सफेद या पीले रंग के धब्बे बन जाते हैं। पौधों पर बने जाले माईट की उपस्थिति को दर्शाते हैं। इन जालों में मिट्टी के छोटे-छोटे टुकड़े जमा हो जाते हैं, ये सभी पौधों पर माईट की उपस्थिति को दर्शाने के लिए अति महत्वपूर्ण सूचक है। पत्तियों के अलावा, माईट कोमल तनों, फूलों आदि को भी रस चूस कर कमजोर बनाते हैं। साथ ही साथ ये फसलों

करना ज़रूरी है, कि सभी माईट हानिकारक नहीं होती हैं, कुदरत में कुछ परभक्षी माईट भी पाई जाती है, जोकि पादपभक्षी माईट का शिकार करके उनकी संख्या को कम करती है। आज कृषि में माईट की समस्या बहुत तेजी से बढ़ रही है, जिसका प्रमुख कारण अधिक कीटनाशी दवाओं का प्रयोग,



अधिक उपज देने वाली किस्मों का प्रयोग, नाइट्रोजन उर्वरकों का ज़रूरत से अधिक उपयोग करना आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त ग्रीन हाउस में तो माईट की समस्या बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही है, क्योंकि वहां का आंतरिक तापमान

7. किसान भाई, मित्र माईट (परभक्षी माईट) की सही-सही पहचान करके उनका संरक्षण तथा संवर्धन करें।
8. अधिक प्रकोप की स्थिति में माईटनाशक दवाओं का छिड़काव करना चाहिए।

शेष पृष्ठ 3 की

मदार खरपतवार है औषधीय...

पत्तों के अर्क में अल्कलॉइड और फ्लेवोनॉइड पाए जाते हैं, जो टहनियां पत्तों या जड़ों से रिसकर मृदा विलियन में मिल सकते हैं तथा बीज के अंकुरण और मुल्कों के विस्तार को बाधित कर सकते हैं।

खरपतवार की अन्य एलेलोपैथिक प्रजातियां : विविध एलेलोपैथिक खरपतवार की प्रजातियों में विशेष एलेलोकेमिकल्स पाए

जिनके अंदर एलेलोपैथिक गुण हैं। **निष्कर्ष एवं संभावनाएं**

हम अक्सर अपने आसपास लगे खरपतवारों को अनउपयोगी व अवांछित समझकर नजर अंदाज कर देते हैं। यह जरूरी नहीं की हर खरपतवार फसल के लिए नुकसानदायक हो और आज के समय में जहां लोग भारी मात्रा में रासायनिक शाकनाशी का प्रयोग करते हैं यह बेहद जरूरी हो गया



जाते हैं, जिनका उपयोग अन्य खरपतवार प्रजातियों के अंकुरण और वृद्धि को दबाने के लिए किया गया है जैसे कि पार्थेनियम रै गवीड (Parthenium hysterophorus) के विभिन्न भागों में पार्थेनीन नामक सेक्वीटरपीन प्रकृति का सेकेंडरी मेटाबोलाइट पाया जाता है जिसके उपयोग से अमेरैथस विरिडस, बार्नार्ड घास और छोटे बीज वाली कैनरी घास के (Phalaris minor) के अंकुर विकास को कम कर दिया, इसी तरह मॉर्निंग ग्लोरी (Ipomea tricolor), आम लैटना (Lantana camara) आदि में भी विशेष एलेलोकेमिकल्स मौजूद होते हैं

है की ऐसी मौजूद अन्य खरपतवार की प्रजातियां जिनमें अल्मोपैथिक गुण हैं, उनका पता लगाये और उनके अंदर पाए जाने वाले एलीलोकेमिकल्स पर विशेष शोध करने की आवश्यकता है।

मदार में पाए गए फाइटो-टॉक्सिक गुण इसे एक महत्वपूर्ण एलेलोपैथिक खरपतवार बनाते हैं इसमें पाए गए मेटाबॉलिट्स पर गहन शोध करने की आवश्यकता है ताकि आने वाले समय में हम ऐसे जैविक शाकनाशी का प्रयोग करें जो पर्यावरण के अनुकूल हो और मदार इसलिए एलेलोपैथिक जगत में चर्चा का विषय हो सकता है।

शेष पृष्ठ 2 की

क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर — एक उभरता आयाम

विकास को बढ़ावा देते हुए, जलवायु से जुड़ी अलग-अलग समस्याओं का समाधान करती है।

क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर (सीएसए) एक ऐसा दृष्टिकोण है जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह एक ऐसी विधि है जो किसानों को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल बनाने और उनकी आजीविका में सुधार करने में मदद करती है। सीएसए का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करना, कृषि उत्पादकता बढ़ाना, और किसानों की आजीविका में सुधार करना है।

क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर के प्रमुख तत्व जलवायु परिवर्तन के अनुकूल फसलें : सीएसए में ऐसी फसलें उगाई जाती हैं जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सहन कर सकती हैं।

सिंचाई की कुशलता :

सीएसए में सिंचाई की कुशलता बढ़ाने के लिए ड्रिप इरिगेशन और स्प्रिंकलर इरिगेशन जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता



है। मृदा स्वास्थ्य : सीएसए में मृदा स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए जैविक उर्वरकों और कवक का उपयोग किया जाता है।

कृषि वानिकी : सीएसए में कृषि वानिकी को बढ़ावा दिया

जाता है, जिसमें पेड़ों और फसलों को एक साथ उगाया जाता है। क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर के लाभजलवायु परिवर्तन के प्रभावों

को कम करना : सीएसए जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में मदद करता है।

कृषि उत्पादकता बढ़ाना : सीएसए कृषि उत्पादकता बढ़ाने में मदद करता है।

आजीविका में सुधार :

सीएसए किसानों की आजीविका में सुधार करने में मदद करता है।

पर्यावरण संरक्षण : सीएसए पर्यावरण संरक्षण में मदद करता है।

क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर के उदाहरण

भारत में सीएसए : भारत में सीएसए को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की गई हैं, जैसे कि राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन मिशन।

अफ्रीका में सीएसए : अफ्रीका में सीएसए को बढ़ावा देने के लिए कई संगठन काम कर रहे हैं, जैसे कि अफ्रीकन डेवलपमेंट क।

एशिया में सीएसए : एशिया में सीएसए को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की गई हैं, जैसे कि एशियन डेवलपमेंट क की सीएसए पहल।

क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर के लिए चुनौतियां जलवायु परिवर्तन की अनिश्चितता :

जलवायु परिवर्तन की अनिश्चितता सीएसए के लिए एक बड़ी चुनौती है। संसाधनों की कमी : सीएसए के लिए संसाधनों की कमी एक बड़ी चुनौती है। कृषकों की जागरूकता : कृषकों की जागरूकता सीएसए के लिए एक बड़ी चुनौती है।

निष्कर्ष : क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर एक ऐसा दृष्टिकोण है जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और कृषि उत्पादकता बढ़ाने में मदद करता है। यह किसानों को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल बनाने और उनकी आजीविका में सुधार करने में मदद करता है। सीएसए को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की गई हैं, और यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें आगे बढ़ने की बहुत संभावना है।

घीया की वैज्ञानिक विधि से खेती

घीया एक कद्दूवर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। इसको लौकी के नाम से भी जाना जाता है। इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा, खनिज लवण के अलावा प्रचुर



मात्रा में अनेक विटामिन्स भी पाए जाते हैं। लौकी की प्रकृति ठंडी होती है। इसके फल सुपाच्य होने के कारण चिकित्सक रोगियों को लौकी की सब्जी अधिक से अधिक खाने की सलाह देते हैं। लौकी के हरे फलों से सब्जी, रायता, खीर, कोफ्ते, आचार एवं मिठाईयां बनाई जाती हैं।

उन्नत किस्मों का चुनाव : घीया के लिए चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किस्मों की बुवाई करें।

1. पूसा समर प्रोलीफिक लौंग : यह किस्म गर्मी व बरसात दोनों मौसम में उगाने के लिए उपयुक्त है। इस किस्म में फल काफी संख्या में लगते हैं और बेलों की बढ़वार भी काफी होती है। कच्चे फलों की लम्बाई 40-50 सेंटीमीटर व फलों का रंग हल्का हरा होता है। इसकी औसत पैदावार 56-60 क्विंटल प्रति एकड़ है।

2. पूसा समर प्रोलीफिक राऊण्ड : यह किस्म भी गर्मी व बरसात दोनों मौसम के लिए उपयुक्त है। इसके कच्चे फल 15-18 सेंटीमीटर घेरे के गोल व हरे रंग के होते हैं।

3. घीया हिसार-22 : यह किस्म भी ग्रीष्म व बरसात ऋतु में उगाने के लिए उपयुक्त

है। इस किस्म की बेलों की बढ़वार अच्छी होती है, साथ ही साथ उन पर फल भी अधिक मात्रा में लगते हैं इसके कच्चे व खाने योग्य हल्के हरे फलों की औसत लम्बाई लगभग 30 सेंटीमीटर होती है। इसकी औसत पैदावार 100-120 क्विंटल प्रति एकड़ है।

4. हिसार घीया संकर-35 : यह घीया की एक संकर किस्म है। इसके फल बेलनाकार व बेल पर अधिक मात्रा में लगते हैं तथा बेलों की बढ़वार अच्छी होती है। इस किस्म

को ग्रीष्म व वर्षा दोनों ऋतुओं में उगाया जा सकता है। कच्चे

व खाने योग्य हरे फलों की औसत लम्बाई लगभग 25-30 सेंटीमीटर होती है। इसकी औसत पैदावार 120-140 क्विंटल प्रति एकड़ है।

भूमि की तैयारी : वैसे तो घीया की फसल हर प्रकार की भूमि में हो सकती है, लेकिन उचित जल निकास युक्त प्रचुर जीवांश से युक्त चिकनी बलुई मिट्टी इसकी खेती के लिए सबसे उत्तम मानी गई है। इसके लिए भूमि का पी.एच. मान उदासीन होना चाहिए। उदासीन का मतलब ना अम्लीय और ना ही क्षारीय अर्थात् 6.0 से 7.0 के बीच में होना चाहिए। बुवाई से 3-4 सप्ताह पहले गोबर की सड़ी-गली खाद खेत में अच्छी तरह मिला दें, फिर 3-4 बार जुताई करें। हर जुताई के बाद सुहागा लगाएं।

बुवाई का समय : गर्मी की फसल के लिए फरवरी-मार्च तथा बरसात की फसल के लिए जून-जुलाई का समय बुवाई के लिए उपयुक्त है।

बीज की मात्रा : घीया की बुवाई के लिए 1.5 से 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ काफी रहता है। बुवाई से पहले बीज को रात भर पानी में भिगो लेना चाहिए, ताकि बीज का अंकुरण अच्छा हो।

बुवाई की विधि : घीया के बीजों को थोड़ी उठी हुई क्यारियों में नालियों के किनारे पर बोयें, जिनकी चौड़ाई 2-3 मीटर तथा लम्बाई सुविधानुसार रखें। 2 या 3 बीज एक जगह पर 3-4 सेंटीमीटर की दूरी पर बोयें और पौधे पर जब 2 से 3 सच्ची पत्तियां आ जाएं, तब केवल एक स्वस्थ पौधा रख कर शेष पौधों को निकाल दें। पौधों के बीच की दूरी 60 सेंटीमीटर रखें।

खाद व उर्वरकों का प्रयोग : 6 टन गोबर की सड़ी-गली खाद, 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 10 किलोग्राम फास्फोरस, 10 किलोग्राम पोटैश की शुद्ध मात्रा



प्रति एकड़ डालें। बुवाई के समय फास्फोरस व पोटैश की सारी

मात्रा व नाइट्रोजन की आधी मात्रा बुवाई वाले स्थानों पर बराबर मात्रा में डालें। बची हुई नाइट्रोजन की आधी मात्रा को दो बराबर हिस्सों में बांटकर एक महीने बाद व फूल आने पर नालियों में डालकर मिट्टी चढ़ाएं।

सिंचाई : बुवाई बत्तर में करें, यदि बुवाई सूखे में की है, तो तुरंत ही हल्का पानी लगाएं। गर्मी के मौसम में 5-7 दिनों के व बरसात के मौसम में 8-10



दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें। बरसात के मौसम में सिंचाई वर्षा पर निर्भर करती है।

जहां सिंचाई के लिए पानी तैलीय (सोडिक) हो वहां पानी में एक मिलीलीटर तुल्यांक प्रति लीटर आर.एस.सी. को निरस्थीकरण करने के लिए जिप्सम 32 किलोग्राम (80 प्रतिशत शुद्धता) प्रति सिंचाई प्रति एकड़ तथा 8 टन गोबर की सड़ी हुई खाद प्रति एकड़ डालें। इससे घीया की फसल पर तैलीय पानी का प्रभाव कम हो जाएगा। साथ ही साथ अच्छी पैदावार भी मिलेगी।

वृद्धि नियामकों का प्रयोग : दो व चार सच्ची पत्तियां आने की अवस्था में पत्तों पर 4 मिलीलीटर इथरेल (50 प्रतिशत) के घोल को 20 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। इससे मादा फूल अधिक संख्या में लगते हैं, अन्ततः पैदावार बढ़ जाती है। कोई चिपचिपा पदार्थ घोल में मिलाना ना भूलें।

अन्तः कृषि क्रियाएं एवं खरपतवार नियंत्रण : दोनों ऋतुओं में सिंचाई के बाद खेत में काफी मात्रा में खरपतवार उग जाते हैं। खरपतवार के नियंत्रण के लिए एक या दो गुड़ाई की आवश्यकता पड़ती है। प्रारम्भिक अवस्था में ट्रैक्टर की टिलर के द्वारा भी खरपतवार को नियंत्रित किया जा सकता है क्योंकि तब पौधे छोटे होते हैं।

फलों की तुड़ाई व पैदावार : क्योंकि ज्यादा पके फल खाने के लिए उपयुक्त

नहीं होते, इसलिए उनको कच्ची अवस्था में तोड़ें, जब उनका रंग हरा हो। फलों का वजन किस्मों पर निर्भर करता है। मुलायम फलों की तुड़ाई डण्ठल लगी अवस्था में किसी तेज़ चाकू से करें।

औसत पैदावार : 40-60 क्विंटल/एकड़

हानिकारक कीड़े व उनकी रोकथाम : घीया में लालड़ी, तेला, चेपा, माईट, फल मक्खी



और जड़ गांठ सूत्रकृमि का प्रकोप होता है। लालड़ी के लिए 25 मिलीलीटर साइपरमेथरिन 25 ई.सी. या 30 मिलीलीटर फेनवेलरेट 20 ई.सी. नामक रसायन के घोल को 100 लीटर पानी में घोल कर एक एकड़ में छिड़काव करें। तेला, चेपा और माईट के लिए मैलाथियान 250 मिलीलीटर 50 ई.सी. और फल मक्खी के लिए मैलाथियान 400 मिलीलीटर 200-250 लीटर पानी में प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें। घीया में जड़ गांठ सूत्रकृमि की रोकथाम के लिए बुवाई से एक सप्ताह पहले नीम की खल 30 ग्राम प्रति स्थान की दर से मिट्टी में मिलाएं व बीज को बायोटीका से उपचारित करें।

बेल वाली सब्जियों में बीमारियां : घीया में चिट्टा रोग, एन्थ्रैक्नोज, डाऊनी मिल्ड्यू व मौजेक रोग नामक बीमारियां का प्रकोप होता है।

रोकथाम : 1. पाऊंडरी मिल्ड्यू की रोकथाम के लिए 8-10 किलोग्राम प्रति एकड़ गंधक का धूड़ा का छिड़काव करें।

2. एन्थ्रैक्नोज व डाऊनी मिल्ड्यू की बीमारियों में रोकथाम के लिए 400 ग्राम इण्डोफिल एम-45 दवा 200 लीटर पानी प्रति एकड़ में छिड़काव करें।

सावधानियां : 1. सिफारिश की गई कीटनाशक ही डालें, क्योंकि घीया कुछ अन्य कीटनाशकों से जल सकती है।

2. ओस के समय धूड़ा ना करें। 3. खराब व सड़े फल इकट्ठे करके मिट्टी में गहरा दबा दें।

4. कीटनाशक के छिड़काव से पहले फल तोड़ लें।

इस रोग को फैलाने में जीवाणु और विषाणु दोनों सहायक हैं। जब बछड़े की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। तब यह रोग बछड़ों में आसानी से हो जाता है। बछड़े में गर्मियों की अपेक्षा सर्दियों में निमोनिया होने की आशंका ज्यादा होती है। इसलिए सर्दियों में बछड़ों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सही तरीके से कोलोस्ट्रम, समय पर टीकाकरण एवं सर्दियों में उचित प्रबंधन करके इस बीमारी को रोका जा सकता है। इस बीमारी में बछड़ों में खांसी, श्वास के दौरान आवाज आना, मुंह से श्वास लेना आदि लक्षण देखे जा सकते हैं।



बछड़ों में निमोनिया रोकथाम और प्रबंधन

“एक अनुसंधान के अनुसार निमोनिया से भैंसों के कटड़ों की मृत्यु दर गायों के बछड़ों की अपेक्षा ज्यादा है। इस रोग को फैलाने में जीवाणु और विषाणु दोनों सहायक हैं। जब बछड़े की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। तब यह रोग बछड़ों में आसानी से हो जाता है। बछड़े में गर्मियों की अपेक्षा सर्दियों में निमोनिया होने की आशंका ज्यादा होती है। इसलिए सर्दियों में बछड़ों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सही तरीके से कोलोस्ट्रम, समय पर टीकाकरण एवं सर्दियों में उचित प्रबंधन करके इस बीमारी को रोका जा सकता है। इस बीमारी में बछड़ों में खांसी, श्वास के दौरान आवाज आना, मुंह से श्वास लेना आदि लक्षण देखे जा सकते हैं। इस बीमारी में कभी-कभी तो बछड़ा इतना कमजोर हो जाता है कि अपने आप उठने में भी अक्षम होता है। बछड़े को जीभ पकड़कर कोलोस्ट्रम

बीमारी के उपचार एवं रोकथाम में बहुत आवश्यक है। एंटीबायोटिक, विषाणु संक्रमण के खिलाफ ज्यादा प्रभावी नहीं है। यदि निमोनिया जीवाणु के कारण हुआ है तो एंटीबायोटिक लाभकारी होती है। यदि एंटीबायोटिक संपूर्ण रूप (सही मात्रा एवं सही दवा) में प्रयोग नहीं की जाती तो जीवाणुओं में एंटीबायोटिक के प्रति प्रतिरोधक क्षमता समाप्त हो जाती है। बछड़ों में मुंह के द्वारा एंटीबायोटिक उपचार की सिफारिश नहीं की गई है, क्योंकि इससे रक्त में सही मात्रा में दवाई नहीं पहुंच पाती और बछड़े की भूख भी कम हो जाती है। कई दुर्लभ मामलों में फेफड़े

पहला एवं महत्वपूर्ण कार्य है।

अच्छा पोषण सुनिश्चित करना :- कोलोस्ट्रम के साथ-साथ उभरते बछड़ों के पोषण का भी खास ध्यान रखा जाना चाहिए। दुग्ध दुहने के पश्चात् बछड़े को दूध पीने के लिए मां के पास छोड़ देने से बछड़े को जन्म के बाद दो महीने तक उचित मात्रा में दूध पिलाना चाहिए। दूध पीने के पश्चात् बछड़े को तुरंत पानी नहीं पिलाना चाहिए। यदि बछड़े का पोषण सही तरीके से नहीं किया गया तो बछड़े कुपोषण और आसानी से बीमारी के शिकार हो जाते हैं। अतः बछड़े के राशन में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन एवं वसा उचित मात्रा में होने चाहिए।

पेचिश को रोकना :- जिन बछड़ों को पेचिश (दस्त) हो जाती है वे आगे चलकर निमोनिया का शिकार जल्दी होते हैं। दस्त के कारण बछड़ों में बीमारी को रोकने की शक्ति नहीं रहती और बछड़े का वजन भी कम हो जाता है। इसलिए पेचिश के दौरान भी बछड़े को पूरी मात्रा में दूध पिलाना चाहिए। ऐसी स्थिति में बछड़ों को ओरल रिहायीडेशन सोल्यूशन भी दे सकते हैं। पशुचिकित्सक से परामर्श करके बछड़े को पेट के कीट मारने की औषधि भी दे सकते हैं।

तनाव को कम करना :- बछड़ों में तनाव का होना भी निमोनिया का एक मुख्य कारण है, जो बछड़े तनाव में होते हैं, उनमें जीवाणु और विषाणु अधिक मात्रा में पनपते हैं। इसलिए वो जल्द ही बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। तनाव से बछड़े की प्रतिरक्षा प्रणाली की क्षमता कमजोर हो जाती है। बछड़े को मां से दूर करना, सींगों का निकालना, कान को छेदना (टैटूइंग एवं टैग लगाना), टीकाकरण और विपरीत पर्यावरण परिस्थिति (अधिक गर्मी एवं अधिक सर्दी) आदि तनाव के मुख्य कारण हैं। अतः इन सब बातों का ध्यान रखकर हम बछड़ों में तनाव को कम कर सकते हैं।

बोवाइन वायरल डायरिया को रोकना :- निमोनिया उत्पन्न करने में बोवाइन वायरल डायरिया भी एक गंभीर कारण है। जिन बछड़ों में यह हो जाता है, उन बछड़ों को स्वस्थ बछड़ों से अलग करके पशुशाला से दूर रखा जाना चाहिए। इस बीमारी को रोकने के लिए उचित समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए।

स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराना :- बछड़े को जिस जगह (शेड) में रखा जाता है, वहां पर वातावरण स्वच्छ होना चाहिए। बछड़ों के कक्ष धूल-मिट्टी के कण, अमोनिया गैस आदि से रहित होने चाहिए। हवा का आवागमन बछड़े के कक्ष में अच्छी तरह होना चाहिए। इससे निकली हानिकारक गैसें एकत्रित न हो पाएँ। स्वच्छ वातावरण बछड़ों को निमोनिया एवं अन्य बीमारियों से भी बचाता है।

टीकाकरण :- टीकाकरण संक्रमण के जोखिम को कम करने में सहायक होता है। टीकाकरण के साथ-साथ प्रबंधन कार्यक्रम भी प्रभावी होना चाहिए, तभी टीकाकरण पूर्ण रूप से कामयाब हो पाएगा। अतः उचित समय पर बछड़ों का टीकाकरण होना चाहिए।

सावधानियां :- निमोनिया को रोकने में उसका सही निदान एवं उपचार बहुत जरूरी है। यदि बछड़े का उपचार नहीं किया जाता है तो हानिकारक जीवाणुओं की संख्या बढ़ने लगती है और बछड़े को अन्य बीमारियों होने का खतरा बढ़ जाता है। बछड़े को कोलोस्ट्रम एवं दूध सही मात्रा में पिलाना चाहिए। बछड़े के रहने के स्थान पर सूखे का प्रबंध भी होना चाहिए। छोटे एवं बड़े बछड़ों को अलग-अलग समूह में रखना चाहिए। जो बछड़े पेचिश का शिकार हो जाते हैं, उन्हें स्वस्थ बच्चों से अलग कर देना चाहिए। सही समय पर टीकाकरण, सही मात्रा में कोलोस्ट्रम पिलाना एवं उचित आवासीय प्रबंधन आदि

निमोनिया की रोकथाम में महत्वपूर्ण है।

आवास प्रबंधन :- बछड़े को ब्याने के कक्ष से जल्द निकाल लेना चाहिए। ब्याने के कक्ष को साफ रखना चाहिए, क्योंकि पशु ब्याने के बाद कक्ष में जीवाणुओं एवं विषाणुओं की संख्या बढ़ जाती है। ब्याने के तुरंत बाद बछड़े को साफ तौलिए से साफ करके मादा पशु से अलग कर देना चाहिए।

- ब्याने के तुरंत बाद बछड़े की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, इसलिए बछड़े आसानी से जीवाणुओं और विषाणुओं के संक्रमण का शिकार हो जाते हैं।

- हर पंद्रह दिन के अंतराल पर बछड़े के कक्ष में निस्संक्रामक दवाई का छिड़काव करना चाहिए।

- बछड़े के बैठने का स्थान शुष्क एवं आर्द्रता रहित होना चाहिए।

- प्रतिदिन बछड़े के कक्ष से मलमूत्र बाहर निकालकर पशुशाला से बाहर उचित स्थान पर डालना चाहिए।

- अधिक सर्दियों के दिनों में बछड़ों के कक्ष में उचित तापमान रखने हेतु पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए।

निमोनिया उत्पन्न करने वाले सूक्ष्मजीव

विषाणु :- बोवाइन रेस्पिरैटरी सिनसायीटियल वायरस

- पैरा इन्फ्लुएंजा वायरस
- बोवाइन कोरोना वायरस
- बोवाइन हर्पिस वायरस-1

जीवाणु :- मानहिमिया हिमोलीटिका

- पाश्चुरेल्ला मल्टोसीडा
- ट्यूपेरिल्ला पायोर्जेस

परजीवी :- लंगवर्म (फेफड़ों के कृमि)

बछड़ों में निमोनिया के लक्षण

- बछड़े का कमजोर होना
- सुस्ती और उदासी
- पीछे के दोनों पक्षों का खोखला होना
- भूख ना लगना।
- सांस लेते समय आवाज (घरड़-घरड़) आना
- बुखार का आना
- मुंह से लार टपकना
- खांसी आना
- नाक से पानी आना
- नाक का बंद होना
- उठने में कठिनाई होना



पिलाने से निमोनिया हो जाता है, क्योंकि जीभ पकड़ने से कोलोस्ट्रम सीधे फेफड़ों में चला जाता है। इस बीमारी को बढ़ाने में पर्यावरणीय कारकों (कम तापमान एवं उच्च आर्द्रता) की भी भूमिका है।”

निमोनिया, डेयरी बछड़ों में एक प्रमुख समस्या है। यह रोग मूलतः 1-5 महीने के बछड़ों में ज्यादा होता है। इस रोग में बछड़े बहुत कमजोर हो जाते हैं। बछड़ों को भविष्य का पशु माना जाता है। यदि बछड़ों की देखभाल ठीक से की जाएगी तभी भविष्य के लिए अच्छे पशु प्राप्त किए जा सकते हैं। इस बीमारी के कारण बछड़ों की मृत्यु हो जाती है। इससे किसानों को भारी आर्थिक क्षति होती है।

- निमोनिया का उपचार :- पशुचिकित्सक की सलाह इस

के कृमि भी निमोनिया उत्पन्न करने में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

निमोनिया की रोकथाम के उपाय

कोलोस्ट्रम की उचित मात्रा बछड़े को पिलाना :- कोलोस्ट्रम को बछड़ों की पहली खुराक माना जाता है। कोलोस्ट्रम बछड़े को जन्म के छह घंटे के भीतर पिला देना चाहिए। कोलोस्ट्रम में एंटीबाडी की मात्रा भरपूर होती है। इसलिए कोलोस्ट्रम बछड़े की रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है। जिन बछड़ों को कम मात्रा में कोलोस्ट्रम दिया जाता है, वे निमोनिया का शिकार जल्दी हो जाते हैं। कोई भी प्रबंधन कोलोस्ट्रम प्रबंधन के बिना कामयाब नहीं हो सकता। बछड़े को सही मात्रा एवं सही समय पर कोलोस्ट्रम पिलाना सबसे



आर.पी. तिवाड़ी व
फिलीक्स बास्ट

पंजाब की 'कैंसर बेल्ट' के संकट की भ्रांति दूर करने का वक्त

(एएआईआर)- जो कि विविधतापूर्ण आबादी के आंकड़ा आधारित तुलनात्मक अध्ययन करने का बेस्ट पैमाना है, दर्शाता है कि भ्रांति किस तेजी से फीकी पड़ जाती है। आईसीएमआर-एनसीडीआईआर (2025-26) के डेटा के आधार

ज्यादा होंगे, वहां आसपास के गांवों की अपेक्षा कैंसर के मामले ज्यादा होंगे, भले ही वहां का पानी उनसे ज्यादा साफ हो। जिन राज्यों में लोगों की औसत उम्र कम है, वहां कई लोग 'कैंसर की उम्र' तक पहुंचने से पहले ही संक्रामक

महज एक बढ़ा-चढ़ाकर पेश की गई कहानी जानकर, आखिरकार हम अपना वैज्ञानिक ध्यान और संसाधन इस इलाके की वास्तविक स्वास्थ्य एवं पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं पर लगा सकते हैं। इनमें हेपेटाइटिस सी, मेटाबोलिक सिंड्रोम,



पर, बटिंडा क्षेत्र का कैंसर एएआईआर सूचकांक प्रति 1,00,000 लोगों पर 125 मामले है। हालांकि यह राष्ट्रीय औसत (लगभग 100) से थोड़ा ज्यादा है, लेकिन यह दिल्ली (146) या केरल (135) की तुलना में काफी कम है। मिजोरम में एएआईआर बहुत अधिक बढ़कर 256 है। अगर 125 के आंकड़े के साथ बटिंडा 'कैंसर बेल्ट' कहलाता है, तब तो 256 दर के साथ, मिजोरम उस हिसाब से 'राष्ट्रीय आपदा' होना चाहिए, फिर भी निशाना केवल पंजाब को ही बनाया जा रहा है।

इस संकट में सबसे ज्यादा नजरअंदाज किया गया पहलू, विरोधाभासी रूप से, स्वास्थ्य और पोषण के क्षेत्र में पंजाब की शानदार उपलब्धि है। 2006-2010 के दौर में, जब वायरल हुई वे डॉक्यूमेंट्रीज रिलीज हुई थीं, पंजाब तब भारत के सबसे समृद्ध राज्यों में से एक था, जहां की औसत जीवन प्रत्याशा 70.6 साल थी-जो तब राष्ट्रीय औसत से 4.5 साल ज्यादा थी। भले उसके बाद जीवन प्रत्याशा का यह राज्य-राष्ट्रीय अंतर लगातार कम होता गया है-संभवतः वायु प्रदूषण के कारण-फिर भी पंजाब का यह आंकड़ा अभी भी राष्ट्रीय औसत से ऊपर है। पंजाब में जीवन प्रत्याशा का ज्यादा होना किसी 'किस्मत' जनित आनुवंशिकी की वजह से नहीं, बल्कि यह पंजाबी समुदाय में मौजूद 'परमार्थ संस्कृति' का नतीजा है, जो 'लंगर' और 'सेवा' को प्राथमिकता देती है। इसका अन्य कारण है 2005 के बाद छपे लेख और 2010 में बेहद लोकप्रिय हुई डॉक्यूमेंट्री।

कैंसर बुढ़ापे की बीमारी है। उदाहरण के लिए, जिस गांव में 80 साल से अधिक उम्र के लोग

बीमारियों अथवा हृदय रोगों से मर जाते हैं। गौरतलब है कि जिन राज्यों में कैंसर की एएआईआर दर पंजाब से ज्यादा है (जैसे केरल, दिल्ली और मिजोरम), वहां लोगों की औसत उम्र भी अधिक है। 'कैंसर बेल्ट' वाली बात को

फैटी लिवर रोग, वायु प्रदूषण, शहरी कचरे का सही निपटान, भारी धातुओं के जहर और एंडोक्राइन को बिगाड़ने वाले 'नॉनिलफेनोल' जैसे रसायनों की उच्च मात्रा शामिल है। पिछले कई सालों से, पंजाब भारत में हेपेटाइटिस सी संक्रमण

का मुख्य केंद्र बना हुआ है - भारत भर में हेपेटाइटिस सी के कुल प्रमाणिक मामलों के लगभग 35 प्रतिशत पंजाब के ही होते हैं। 44.2 प्रतिशत सूचकांक के साथ, पंजाब भारत में मोटापे का मुख्य केंद्र है, जबकि 53 प्रतिशत के साथ चंडीगढ़ में फैटी लिवर रोग के सर्वाधिक मामले पाए जाते हैं। पंजाब वास्तव में स्वास्थ्य एवं पर्यावरण से जुड़ी कई बड़ी समस्याओं का मुख्य केंद्र है - लेकिन आंकड़े साफ दर्शाते हैं कि कैंसर उनमें से एक नहीं है। जहां हम पंजाब की कमियों को छिपाए नहीं वहीं ठीक इसी वक्त, बीमारियों से जुड़े आंकड़ों में पूरी सच्चाई सामने लाने की उम्मीद भी रखें। हम आंकड़ों के मायाजाल से निर्मित भ्रांत धारणाओं के आधार पर अपनी क्षेत्रीय पहचान को आकार देना स्वीकार नहीं कर सकते।

अब समय आ गया है कि हम तार्किक विमर्श और ठोस, अकाट्य आंकड़ों का उपयोग करके, पिछले 20 वर्षों से चली आ रही भ्रामक मिथक को तोड़ें और 'कैंसर बेल्ट' तथा 'कैंसर ट्रेन' से जुड़े प्रतिक्रियात्मक चक्र को समाप्त करें। आइए, हम स्वास्थ्य और स्वस्थ पर्यावरण के प्रति एक साझा दृष्टिकोण अपनाकर सक्रिय 'नया भारत' आंदोलन का नेतृत्व करें एक ऐसा दृष्टिकोण जो हमारे आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान को हमारी प्राचीन तार्किक क्षमता-विशेष रूप से 'आलोचनात्मक सोच' की शक्ति-के साथ एकीकृत करने वाला हो।

प्रो. आर.पी. तिवाड़ी, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बटिंडा के कुलपति हैं, जबकि फेलिक्स बास्ट, प्रोफेसर हैं। (विचार निजी हैं)

पठानकोट, गुरदासपुर, होशियारपुर, रोपड़ और नवांशहर में होती है आम की खेती

मैंगो हॉपर फूलों-पत्तियों का रस चूस चौपट करते हैं फसल

आम उत्पादक मार्च माह में मैंगो हॉपर (आम का टिड्डा) के बढ़ते प्रकोप को लेकर सतर्क रहें। इस समय आम की फसल फूलों की अवस्था में है। ऐसे समय में यह कीट सर्वाधिक नुकसान पहुंचाता है। भारत के लगभग सभी राज्यों में आम की खेती की जाती है, जबकि पंजाब में होशियारपुर जिला आम उत्पादन के लिए विशेष पहचान रखता है। फरवरी-मार्च के दौरान जब पेड़ों पर बौर आता है, तब मैंगो हॉपर बड़ी संख्या में फूलों और कोमल पत्तियों पर एकत्र होकर उनका रस चूसते हैं। इससे उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पिछले वर्ष होशियारपुर जिले के कई बागों में इस कीट का गंभीर प्रकोप देखने को मिला था, जिसके कारण किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा था। इसलिए समय रहते इसकी पहचान और रोकथाम अत्यंत आवश्यक है।

सर्दियों में बाग की घनी और अनावश्यक शाखाओं की छंटाई करनी चाहिए, ताकि धूप और हवा का समुचित प्रवाह बना रहे। खेत में अनुशंसित दूरी पर

यू.पी. सबसे बड़ा आम उत्पादक, पंजाब में 9127 हैक्टेयर में आम की खेती

2023-24 के आंकड़ों के अनुसार, पंजाब में आम की खेती 9127 हैक्टेयर में की गई थी। यह मुख्यतः उपपर्वतीय इलाकों पठानकोट, गुरदासपुर, होशियारपुर, रोपड़ और नवांशहर में की जाती है। सूबे में साल 1990-91 (11.7 हजार हैक्टेयर) और 1995-96 (15.2 हजार हैक्टेयर) को छोड़ पिछले 40 सालों में 5.5 हजार से लेकर 9 हजार हैक्टेयर में आम की खेती की जाती रही है। भारत में लगभग 23 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में यह खेती होती है। 26 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ यू.पी. सबसे बड़ा आम उत्पादक राज्य है। देश में 2024-25 में आम का उत्पादन 228.37 लाख मीट्रिक टन रहा।



ही पौधा रोपण करना चाहिए। प्रति एकड़ 5 लीटर पी.ए.यू. नीम या धरेक का घोल 500 लीटर पानी में मिला कर सप्ताह के अंतराल पर दो बार छिड़काव किया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर 200 मिलीलीटर कॉन्फिडोर 17.8 एस.एल.

(इमिडाक्लोप्रिड) या 50 ग्राम एकटारा 25 डबल्यू.जी. (थायामिथोक्सम) 500 लीटर पानी में घोल कर 15 दिन अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

- डॉ. राकेश कुमार शर्मा, वरिष्ठ प्रसार वैज्ञानिक (कीट विज्ञान), फार्म सलाहकार सेवा केन्द्र, गंगियां

कोई व्यक्ति जब मालवा क्षेत्र की 'कैंसर बेल्ट' शब्द सुनता है, तो लगेगा कि विज्ञान प्रेरित लगने वाला यह निष्कर्ष लंबे शोध अध्ययनों पर आधारित होगा, जबकि असल में ऐसा बिल्कुल नहीं। पंजाब वास्तव में कई स्वास्थ्य और पर्यावरणीय संकटों का केंद्र है- लेकिन आंकड़े स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि कैंसर उनमें से एक नहीं है।

एक दशक से, पंजाब के जन-स्वास्थ्य से जुड़ी चर्चाओं में जो एकमात्र छवि सबसे ज्यादा उभरती है वह है ट्रेन नंबर 14888, जिसे 'कैंसर एक्सप्रेस' भी कहा जाता है। आधी रात बटिंडा से बीकानेर जाने वाली इस रेलगाड़ी में सवार लोगों को देखने वाले और पश्चिमी देशों के डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माताओं के लिए, यह एक 'विफल' भूमि का उदाहरण है-एक पुण्यभूमि जिसका नुकसान उसकी कथित कृषि-सफलता ने ही किया। हालांकि आलोचनात्मक नजरिए से इस स्थिति की गहन जांच करने पर इस दलील की खामी जाहिर हो जाती है।

दुर्भाग्य से, कोई बाहरी व्यक्ति जब मालवा क्षेत्र की 'कैंसर बेल्ट' शब्द सुनता है तो लगेगा कि विज्ञान-प्रेरित लगने वाला यह निष्कर्ष लंबे शोध अध्ययनों पर आधारित होगा, जबकि असल में ऐसा बिल्कुल नहीं। मीडिया में इस शब्द का पहला लिखित उपयोग जून, 2005 में 'डाउन टू अर्थ' मैगजीन में हुआ था। यह नाम एक भाषाई बदलाव रणनीति का परिणाम है, मालवा इलाके के लिए दशकों से इस्तेमाल हो रहे 'कॉटन बेल्ट' में कॉटन की जगह कैंसर रखकर नया नाम गढ़ डाला। तब से, दुनिया के पर्यावरण पत्रकारों ने इस कहानी को अलग-अलग तरीकों से दिखाया।

एक सराहनीय सामाजिक सेवा के अलावा 'कैंसर ट्रेन' के वजूद की कोई और वजह नहीं। 1940 के दशक से, बीकानेर का आचार्य तुलसी रीजनल कैंसर हॉस्पिटल (बाद में देश का 13वां क्षेत्रीय कैंसर सेंटर बना) मुफ्त कैंसर इलाज देता आया है, जिनमें मालवा इलाके के मरीज भी शामिल हैं। इसके अलावा, 1990 के दशक से ही, भारतीय रेलवे कैंसर मरीजों के लिए भाड़ा माफी और तीमारदार के लिए स्लीपर और एसी-तृतीय यान में किराया छूट दे रहा है। इसलिए, ट्रेन में 'भीड़' की वजह सस्ते इलाज के साथ मुफ्त टिकटों की सुविधा भी है न कि सिर्फ स्थानीय विषाक्तता से उपजा रोग।

आधार जांच दर, कथित एज-एडजस्टेड ईसिडेंस रेट'

पानी और समानता को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता। जहां पानी सुरक्षित, सुलभ और समान रूप से उपलब्ध होगा, वहीं शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय मजबूत होंगे। जल दिवस याद दिलाता है कि जल संकट का समाधान तभी टिकाऊ होगा, जब उसमें महिलाओं और पुरुषों दोनों की समान भागीदारी होगी।

विश्व
जल
दिवस

पानी से जुड़ा लैंगिक समानता का मुद्दा



पानी केवल एक प्राकृतिक संसाधन नहीं है, बल्कि मानव सभ्यता की रीढ़ भी है। खेती, उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक जीवन, सब कुछ पानी पर निर्भर है। इसके बावजूद आज दुनिया गंभीर जल संकट का सामना कर रही है। यह संकट केवल पानी की कमी का नहीं, बल्कि उसके असमान वितरण, प्रबंधन की विफलता और सामाजिक असंतुलन का भी है। इसी बारे में चेतना जगाने के लिए संयुक्त राष्ट्र हर वर्ष 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाता है।

विश्व जल दिवस की शुरुआत 1993 में हुई थी, जब महसूस किया गया कि पानी से जुड़ी समस्याओं को केवल तकनीकी या स्थानीय मुद्दा मान कर नहीं सुलझाया जा सकता। यह एक वैश्विक चुनौती है, जिसका समाधान सामूहिक जिम्मेदारी से संभव है। हर वर्ष एक विशेष विषय चुन कर पानी के किसी एक पहलू पर फोकस किया जाता है, ताकि नीति निर्धारकों व नागरिकों को स्पष्ट दिशा मिल सके। वर्ष 2026 के लिए विश्व जल दिवस की थीम है पानी और लैंगिक समानता। इसका संदेश है जहां पानी बहता है, वहां समानता बढ़ती है। जल संकट का प्रभाव सभी पर समान नहीं पड़ता। समाज के कुछ वर्ग खासकर

महिलाएं व लड़कियां, पानी की कमी और खराब जल प्रबंधन से अधिक प्रभावित होती हैं।

दुनिया के अनेक हिस्सों में घर के लिए पानी लाने की जिम्मेदारी महिलाओं पर होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में दूर-दूर से पानी लाना सामान्य बात है। इस प्रक्रिया में उनका समय, ऊर्जा और स्वास्थ्य तीनों प्रभावित होते हैं। जब कोई लड़की रोज कई घंटे पानी लाने में लगती है, तो उसका स्कूल जाना बाधित होता है। जब कोई महिला भारी बर्तन उठाकर लंबी दूरी तय करती है, तो उसका स्वास्थ्य कमजोर होता है।

यहां प्रश्न केवल पानी उपलब्ध होने या न होने का नहीं है, बल्कि यह है कि पानी की कमी किसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। आंकड़े बताते हैं कि पेयजल की सुविधाओं की कमी का सबसे अधिक बोझ महिलाओं पर पड़ता है। विश्व जल दिवस 2026 की थीम जोर देती है कि पानी की समस्या के स्थायी समाधान के लिए महिलाओं को जल प्रबंधन, योजना निर्माण और निर्णय प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाना जरूरी है। अनुभव बताता है कि जहां स्थानीय जल समितियों



दीपक कुमार शर्मा

में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी, वहां जल स्रोतों का रख-रखाव बेहतर हुआ और जल उपयोग अधिक जिम्मेदारी से किया गया।

भारत जैसे देश में यह विषय और अधिक प्रासंगिक है। भारत दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है, वहीं यहां क्षेत्रीय जल असमानता बहुत गहरी है। कहीं बाढ़ की समस्या, तो कहीं सूखा। दोनों ही स्थितियों में महिलाओं पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है। जल जीवन मिशन जैसी योजनाओं ने भारत में हर घर नल से जल पहुंचने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इससे कई क्षेत्रों में महिलाओं का समय बचा है, जिसे वे शिक्षा, रोजगार और सामाजिक गतिविधियों में लगा पा रही हैं। इससे स्पष्ट है कि जब पानी की उपलब्धता सुनिश्चित होती है, तो समानता की दिशा में भी ठोस प्रगति होती है।

पानी को यदि केवल संसाधन मानकर देखा जाएगा, तो समाधान भी सीमित रहेंगे। लेकिन जब पानी को मानव अधिकार और सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण से देखा जाता है, तब नीतियां अधिक समावेशी बनती हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता को मानव अधिकार के रूप में मान्यता दी है। यानी समाज में पानी की उपलब्धता केवल सुविधा नहीं, बल्कि अधिकार है और इस अधिकार से किसी भी वर्ग को वंचित नहीं किया जा सकता।

लैंगिक समानता के बारे में जरूरी है कि जल क्षेत्र में महिलाओं को नेतृत्व के मौके मिलें। इंजीनियरिंग, योजना निर्माण, प्रशासन और निगरानी जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से जल प्रबंधन अधिक संवेदनशील व व्यावहारिक बनेगा। महिलाएं जल संकट को केवल आंकड़ों के रूप में नहीं, बल्कि रोजमर्रा जीवन के अनुभव के रूप में समझती हैं। यही अनुभव नीतियों को जमीन से जोड़ता है।

विश्व जल दिवस 2026 सोचने पर मजबूर करता है कि जल संकट का हल केवल पाइपलाइन, टंकी या परियोजनाओं से नहीं होगा। इसके लिए सामाजिक सोच में बदलाव जरूरी है। जब तक स्वीकार नहीं किया जाएगा कि पानी की कमी असमानता पैदा करती है, तब तक समाधान अधूरा रहेगा। समानता का अर्थ सिर्फ अधिकार देना नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और निर्णय में भागीदारी भी है। पानी का विवेकपूर्ण उपयोग, वर्षा जल संचयन, जल स्रोतों की रक्षा और समाज में जागरूकता फैलाना, ये सभी कदम समानता में योगदान देते हैं।

विश्व जल दिवस 2026 का संदेश अत्यंत स्पष्ट और दूरगामी है। पानी और समानता को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता। जहां पानी सुरक्षित, सुलभ और समान रूप से उपलब्ध होगा, वहीं शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय मजबूत होंगे। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि जल संकट का समाधान तभी टिकाऊ होगा, जब उसमें महिलाओं और पुरुषों दोनों की समान भागीदारी होगी। जहां पानी बहता है, वहीं एक न्यायपूर्ण और समानता वाले समाज की नींव मजबूत होती है।

पौष्टिक एवं पर्याप्त मात्रा में हरा चारा के लिए **ज्वार** उगाएं

संतुलित पशु आहार का पशुपालन में विशेष महत्त्व है। दुधारू पशुओं को संतुलित आहार खिलाने से न केवल उनकी उत्पादकता बरकरार रहती है, अपितु पशुओं की अनेक बीमारियों से भी छुटकारा मिल जाता है। हरा चारा पशुओं के आहार का एक

है तथा वर्ष भर पशुओं के लिए हरा चारा उपलब्ध किया जा सकता है। प्रदेश के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों में ग्रीष्मकाल (मई-जून) में हरा चारा की कमी रहती है। परिणामस्वरूप पशुओं की दूध उत्पादन क्षमता प्रभावित होती है। प्रदेश के इन क्षेत्रों में अधिकतर

के लिए किसान भाईयों को निम्नलिखित कृषि क्रियाएं अपनानी चाहिए।

उन्नत किस्में :- चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा ज्वार की कई उन्नत किस्में विकसित की गई हैं, जो अधिक व पौष्टिक चारा उत्पादन में सक्षम हैं। एच.सी.-136, एच.सी.-171, एस.एस.जी.-59-3, एच.सी.-308, तथा एच.जे.-513 प्रमुख किस्में हैं। ये सभी किस्में मीठी, रसदार तथा पौष्टिक हैं। किसान भाई ज्वार की उपर्युक्त किस्मों को उगाकर लंबे समय तक हरा चारा पशुओं के लिए उपलब्ध कर सकते हैं।

बिजाई का समय :- ज्वार की बिजाई ग्रीष्मकाल एवं वर्षाकाल में की जाती है। ग्रीष्मकालीन फसल की बिजाई 20 मार्च से 10 अप्रैल तक कर लेनी चाहिए। वर्षाकालीन फसल की बिजाई के लिए 25 जून से 10 जुलाई तक का समय उपयुक्त रहता है। एस.एस.जी.-59-3 किस्म की बिजाई मार्च के अंत में करें।

बीज मात्रा व बिजाई का तरीका :- ज्वार की बिजाई 25 सै.मी. के फासले पर कतारों में करें तथा बीज को बिखेर कर बोएं। एक एकड़ में बिजाई के लिए सुडान घास को छोड़कर ज्वार की अन्य किस्मों के 20-24

कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। सुडान घास के 12-14 कि.ग्रा. बीज की प्रति एकड़ के लिए आवश्यकता होती है।

खाद एवं उर्वरक :- खाद की सही मात्रा व सही समय पर प्रयोग करने से ज्वार का पौष्टिक तथा अधिक चारा उपलब्ध होता है। सिंचित अवस्था में 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (45 कि.ग्रा. यूरिया) प्रति एकड़ बिजाई के समय तथा 10 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (22 कि.ग्रा. यूरिया) प्रति एकड़ बिजाई के एक महीने बाद डालें। कम वर्षा की स्थिति में बिजाई के समय 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (45 कि.ग्रा. यूरिया) प्रति एकड़ डालें। सुडान घास के लिए हर कटाई के बाद 10 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (22 कि.ग्रा. यूरिया) प्रति एकड़ देनी चाहिए। रेतीली व फास्फोरस की कमी वाली जमीन में 6 कि.ग्रा. फास्फोरस (40 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट या 15 कि.ग्रा. डी.ए.पी.) प्रति एकड़ बिजाई के समय डालें।

निराई-गुड़ाई व सिंचाई :- खरपतवारों के नियंत्रण तथा नमी संरक्षण के लिए फसल उगने के 15-20 दिन बाद एक बार गुड़ाई करना बहुत अच्छा रहता है। खरपतवारों की रोकथाम खरपतवारनाशक एट्राजीन (50% घु.पा.) 200 ग्राम को 250 लीटर

पानी में मिलाकर बिजाई के 7 से 15 दिन तक छिड़काव करके भी कर सकते हैं। ग्रीष्मकालीन (मार्च-जून) फसल में वर्षाकालीन (जून-जुलाई) फसल की तुलना में अधिक सिंचाइयों की आवश्यकता होती है।

कीट एवं रोग नियंत्रण :- गोभछेदक मक्खी तथा तना छेदक ज्वार फसल के मुख्य हानिकारक कीट हैं। गोभ छेदक मक्खी एक महीने तक की फसल में नुकसान करती है। इस कीट द्वारा नुकसान की क्षति पूर्ति हेतु 10 प्रतिशत अधिक बीज प्रयोग करें तथा बिजाई मध्य मई से लेकर जून तक करें। तना छेदक का आक्रमण फसल उगने के 15 दिन बाद शुरू हो जाता है। इस कीट की रोकथाम के लिए 400 ग्राम कार्बेरिल (50 प्रतिशत घु.पा.) को 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ फसल पर बिजाई के 20 दिन बाद 10 दिन के अंतर पर दो छिड़काव करें।

दोने की कांगियारी तथा लाल धब्बे का रोग ज्वार फसल की प्रमुख बीमारियां हैं। कांगियारी की रोकथाम के लिए बीज का एमीसान (2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज) से उपचार करें। लाल धब्बे के रोग की रोकथाम के लिए जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ाएं और खेत में से बरू घास नष्ट करें।



प्रमुख घटक है। स्वादिष्टता एवं पौष्टिकता के कारण हरा चारा दुधारू पशुओं की दूध की मात्रा बढ़ाने के साथ-साथ पशुओं को अनेक विकारों से मुक्त रखता है। पशुओं की उत्पादकता एवं कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए हरा चारा वर्ष भर आहार में खिलाना अति आवश्यक है। हरियाणा प्रदेश की जलवायु में अनेक प्रकार की चारा फसल आसानी से उगाई जा सकती

किसान हरा चारा के लिए बाजार की प्रजाति जिसे स्थानीय भाषा में 'बाजर' कहते हैं, उगाते हैं। बाजरा से ज्वार की तुलना में काफी कम चारा मिलता है तथा इसमें पौष्टिकता भी कम है। अतः पशुओं को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा उपलब्ध कराने के लिए किसान भाईयों को बाजरा की बजाए ज्वार उगानी चाहिए। ज्वार का अधिक व पौष्टिक चारा उत्पादन

दुबई में डंप हो रहा माल, 2500 करोड़ रुपए अटक युद्ध से हरियाणा का 75 हजार एम.टी. चावल समुद्री रास्तों, बंदरगाहों में फंसा

खाड़ी देशों में चल रहे युद्ध ने हरियाणा के चावल कारोबार की रफ्तार पर ब्रेक लगा दिया है। देश में बासमती चावल निर्यात का सबसे बड़ा हब माने जाने वाले करनाल और कैथल इस संकट से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। हालात ये हैं कि इन दोनों जिलों सहित कुरुक्षेत्र का करीब 75 हजार मीट्रिक टन चावल समुद्री रास्तों और बंदरगाहों में फंसा है। इसमें करनाल का 55 हजार एम.टी., कैथल का 12 हजार एम.टी. और कुरुक्षेत्र का 8 हजार एम.टी. चावल शामिल हैं।

करनाल और कैथल का देश के चावल निर्यात में करीब 40 प्रतिशत और प्रदेश में करीब 70 प्रतिशत हिस्सा है। गल्फ देशों का मुख्य समुद्री रास्ता होर्मुज बंद होने का असर हरियाणा की राइस बेल्ट पर पड़ा है। 20 दिनों से एक्सपोर्ट किए गए चावल की डिलीवरी ठप है, जिससे मिलर्स और निर्यातकों के सामने संकट खड़ा हो गया है। रेड-सी जैसे

वैकल्पिक रास्तों से खाड़ी देश जा रहे जहाजों को काफी समय लग रहा है।

2500 करोड़ की पेमेंट अटकी, 3600 करोड़ का चावल रास्ते में फंसा

जो चावल पिछले माह गल्फ देशों में डिलीवर हो चुका है, उसकी भी करीब 2500 करोड़ रुपए की पेमेंट फंसी है। साथ ही जहाजों में लोडेड 9 हजार करोड़ का चावल समुद्री रास्तों में फंसा है। रूट बंद होने के कारण करीब 3600 करोड़ रुपए का चावल गुजरात की कांडला व मुंदरा पोर्ट पर कंटेनरों में है। इसको कब वैशाल (समुद्री जहाज) में एक्सपोर्ट के लिए लोड करना है, इस बारे में शिपिंग कम्पनियों से सूचना नहीं आ रही है।

दुबई के जिस पोर्ट पर चावल डंप, वहां मिसाइल अटैक

चावल निर्यातक नरेन्द्र मिगलानी ने बताया कि समुद्री रूटों में फंसे चावल के जहाजों

को अस्थाई तौर पर दुबई के सुलाना पोर्ट पर डंप किया था, वहां पर कुछ दिन पहले मिसाइल अटैक हुए हैं, जिससे पोर्ट पर पड़े चावल स्टॉक को खाली करने के नोटिस शिपिंग कम्पनियों को मिल रहे हैं। इससे साफ है कि बीच रास्ते फंसा माल सेफ नहीं है। कम्पनियों को चावल वापस भारत भेजने के लिए भी कह दिया, लेकिन इस पर भी कोई स्पष्ट जवाब नहीं मिल रहा।

किराए के साथ वॉर सरचार्ज वसूला, फिर भी डिलीवरी नहीं

ऑल इंडिया राइस एक्सपोर्ट यूनियन के प्रधान सतीश गोयल ने बताया कि देशभर का 2 लाख एम.टी. (1600 करोड़ रुपए का) समुद्री रास्तों में और 2.50 लाख एम.टी. (2000 करोड़ का) चावल भारत की बंदरगाहों पर फंसा है। शिपिंग कंपनियों ने किराए के साथ 2200 डॉलर वॉर सरचार्ज भी वसूल लिया। इसके बावजूद डिलीवरी नहीं हो रही।

टूटे चावल पर सरकार का बड़ा फैसला, पी.डी.एस. में कटौती, एथेनॉल सैक्टर को मिलेगा 90 लाख टन अनाज

सरकार सार्वजनिक वितरण प्रणाली यानी पी.डी.एस. में बांटे जाने वाले अनाज में टूटे चावल (ब्रोकेन राइस) की हिस्सेदारी घटाने का बड़ा फैसला लेने जा रही है। सरकार 1 अप्रैल 2026 से पी.डी.

एस. में ब्रोकेन राइस की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत से घटा कर 10 प्रतिशत करने का प्रस्ताव कैबिनेट के सामने रखने की तैयारी में है। खाद्य सचिव संजीव चोपड़ा ने यह जानकारी दी। इस बदलाव के बाद हर साल लगभग 90 लाख टन अतिरिक्त ब्रोकेन राइस एथेनॉल उत्पादन के लिए उपलब्ध हो सकेगा। यह कदम ऐसे समय में उठाया जा रहा है, जब पिछले तीन हफ्तों में वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों में करीब 40 प्रतिशत की तेज़ बढ़ोत्तरी हुई है। सरकार एथेनॉल ब्लेंडिंग बढ़ा कर तेल आयात पर निर्भरता कम करना चाहती है।



एथेनॉल ब्लेंडिंग में भारत की उपलब्धि

खाद्य सचिव संजीव चोपड़ा ने बताया कि भारत में पेट्रोल में एथेनॉल ब्लेंडिंग 2013 के 1.5 प्रतिशत से बढ़ कर अब 20 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। इससे अब तक देश को 1.63 लाख करोड़ रुपए से अधिक की विदेशी मुद्रा की बचत हुई है और साल 2014 से अब तक 2.77 करोड़ मीट्रिक टन कच्चे तेल का आयात कम किया जा चुका है। सरकार अब केवल एथेनॉल की आपूर्ति बढ़ाने तक सीमित नहीं रहना चाहती। वह बाज़ार में एथेनॉल की हिस्सेदारी और बढ़ाने पर भी विचार कर रही है। इसमें शामिल संभावित कदम हैं - 20 प्रतिशत से ज्यादा एथेनॉल ब्लेंडिंग, डीजल में एथेनॉल मिश्रण, फ्लैक्स-फ्यूल, वाहनों को बढ़ावा शामिल हैं। इन प्रस्तावों पर जल्द ही फैसला लिया जा सकता है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला लगाया गया खेती अब केवल पेशा नहीं, युवा इसे 'स्टार्टअप' के रूप में अपनाएं : सैनी

बदलते दौर में खेती अब केवल एक पारंपरिक पेशा नहीं रह गई है, बल्कि यह तकनीक और नवाचार से जुड़कर एक बड़े व्यवसाय का रूप ले चुकी है। युवाओं को आगे आकर इसे 'स्टार्टअप' के तौर पर अपनाना चाहिए। यह आह्वान मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सोमवार को किया। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) में 'सतत कृषि - समृद्धि की राह' थीम पर आयोजित दो



दिवसीय खरीफ कृषि मेले के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि यह मेला केवल तकनीक के आदान-प्रदान का मंच नहीं, बल्कि अन्नदाताओं के समर्पण और मेहनत का उत्सव है। कार्यक्रम की अध्यक्षता हकृवि के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने की, जबकि कृषि एवं किसान कल्याण, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य मंत्री श्याम सिंह राणा विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। मुख्यमंत्री सैनी ने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का जिक्र करते हुए क्लाउडमेट स्मार्ट फार्मिंग, ड्रोन तकनीक और डिजिटल कृषि पर बल दिया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार फसल विविधीकरण को बढ़ावा दे रही है ताकि किसान केवल धान-गेहूँ के चक्र पर निर्भर न रहें। जल संरक्षण के उद्देश्य से धान की सीधी बुवाई अपनाने वाले किसानों को 4500 रुपये प्रति एकड़ प्रोत्साहन राशि दी जा रही है। इसके साथ ही ड्रिप व स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि कृषि क्षेत्र वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, मृदा क्षरण और जल संकट जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे माइक्रो-इरिगेशन, सीधी बीजित धान, फसल विविधीकरण और डिजिटल कृषि तकनीकों को अपनाएं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत, रोगरोधी, तापमानरोधी और कम पानी व कम समय में तैयार होने वाली किस्में किसानों की आय बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रही है।

पंजाब के मालवा (बठिंडा, बरनाला, मोगा, फाजिल्का) के पानी में यूरेनियम और फ्लोराइड, माझा (अमृतसर, तरनतारन) में ऑर्गेनिक ज्यादा जहरीले पानी का कहर! मालवा के सैकड़ों गांवों में बचपन ही अपंग

मालवा के गांवों में ज़मीन से निकलने वाली जहरीले पानी का कहर बढ़ता चला जा रहा है। ऐसा ही एक गांव है तेजा रोहिला, जो बॉर्डर से सटा है। 450 घरों के इस गांव में दिव्यांग बच्चे काफी बड़ी गिनती में हैं। 23 साल तक के इन युवाओं के परिजनो ने इलाज के जरिए ठीक करवाने के कई प्रयास किए, लेकिन सफलता न मिलने पर अब बस रोज इनकी देख-रेख में बिताते हैं। गांववासियों के अनुसार कुछ समय पहले एन. जी.ओ. द्वारा गांव के 5 दिव्यांग बच्चों को व्हीलचेयर दी गई थी। सरकार की तरफ से दिव्यांगजनों के लिए 1500 रुपए की पेंशन तो आती है, लेकिन ये बेहद कम है। गांव में साफ पानी के लिए आज भी कोई पक्का हल नहीं है। गांव में हेल्थ सेंटर तक नहीं है।

2009 से 2015 के बीच 1800 से ज्यादा आर.ओ. सिस्टम लगाए गए। रिपेयर नहीं होने के कारण अब ये कबाड़ हो चुके हैं। पीने के साफ पानी के लिए कुछ लोगों ने अपने घरों में आर. ओ. लगवाए हैं, लेकिन गांवों की अधिकांश आबादी प्राइवेट आर.ओ. से पानी खरीद कर या फिर प्रदूषित ज़मीनी पानी ही पीते हैं। बठिंडा, फाजिल्का, अबोहर के गांव पानी के लिए केवल जदोजहर ही नहीं कर रहे, बल्कि गंभीर बीमारियां भी झेल रहे हैं। इन गांवों में कई युवा और बच्चे

दिव्यांग हैं। कई गांवों में हेल्थ सेंटर तक नहीं है। पंजाब स्टेट एक्शन प्लान 2014 की रिपोर्ट में लिखा गया है कि बठिंडा, फरीदकोट, फतेहगढ़ साहिब, फिरोज़पुर, लुधियाना, मानसा, मोगा, मुक्तसर, नवांशहर, पटियाला, रूपनगर और संगरूर का ज़मीनी पानी फ्लोराइड से भरा है। फ्लोराइड ज्यादा होने से कमजोर दांत, हड्डियों में दर्द और जकड़न जैसी समस्या आम है।

साधारण आर.ओ. मशीन हैवी मेटल नहीं निकाल सकता

गांवों में लगे वाटर बॉक्स में नहर के पानी की सफाई होती है, जिसमें इंडस्ट्री का वेस्ट, हैवी मेटल, डाइंग और लैडर इंडस्ट्री की वेस्ट है। आम आर.ओ. हैवी मेटल जैसे यूरेनियम को नहीं निकाल सकता। यहां लगने वाले आर. ओ. पर भी कम्पनियां गारंटी नहीं देती। 10,300 टी.डी.एस. तक पहुंच चुका यह पानी समुद्र से भी अधिक खारा है।

आर.ओ. कबाड़ बने, कभी रिपेयर नहीं हुए

* ग्रैंड वॉटर रिसोर्स ऑफ पंजाब की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार पंजाब का मालवा क्षेत्र (बठिंडा, बरनाला, मोगा, फाजिल्का) यूरेनियम और फ्लोराइड से, जबकि माझा क्षेत्र (अमृतसर, तरनतारन) ऑर्गेनिक से गंभीर रूप से प्रदूषित है।

यूरेनियम प्रदूषण : यूरेनियम की सुरक्षित सीमा 30 पी.पी.बी. है, लेकिन पंजाब के 32.1 प्रतिशत नमूनों में इसका स्तर इससे कहीं अधिक है। मौनसून के बाद यह स्तर 62.5 प्रतिशत नमूनों तक पहुंच जाता है।

सर्वाधिक प्रभावित : बरनाला के 79 प्रतिशत नमूनों में यूरेनियम की मात्रा ज्यादा पाई गई है। इसके अलावा मोगा (63 प्रतिशत), बठिंडा (62 प्रतिशत), फरीदकोट (58 प्रतिशत), मानसा (57 प्रतिशत), फिरोज़पुर (55 प्रतिशत), मुक्तसर (52 प्रतिशत) और संगरूर (49 प्रतिशत) के भूजल में भारी यूरेनियम प्रदूषण है।

पानी सफाई के लिए नई डिस्ट्रीब्यूट्री लाइन बिछेगी

सभी सब डिवीजन में पानी सफाई के लिए नई डिस्ट्रीब्यूट्री लाइन डाली जा रही है। सरफेस पानी के दो प्रोजेक्ट झोटेयांवली और पतरेयां वली गांव में स्थापित किए जा रहे हैं। एक प्रोजेक्ट अगस्त और दूसरा सितंबर-अक्टूबर तक पूरा हो जाएगा। इससे 250 गांवों को सरफेस पानी 24x7 सफाई किया जाएगा। यह पानी ट्रीट होकर ही जाएगा।

- अमरप्रीत कौर संधू, डी.सी. फाजिल्का



‘कृषज कनेक्ट : गति-26’ में

कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्रा. लिमिटेड ने 14 नए उत्पाद किए लांच



एग्रो केमिकल क्षेत्र की अग्रणी कम्पनी कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा अपने प्रमुख वार्षिक कार्यक्रम ‘कृषज कनेक्ट : गति-26’ का सफल आयोजन लखनऊ और इंदौर में क्रमशः 10 और 13 मार्च को किया गया। कार्यक्रम में देशभर से कम्पनी के प्रमुख वितरण सहयोगियों (कृषज सारथियों) ने भाग लिया। इस अवसर पर कम्पनी ने 14 नए उत्पादों का भव्य लांच भी किया।

लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में बिहार/झारखंड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान से जुड़े चैनल पार्टनर्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। वहीं इंदौर में आयोजित कार्यक्रम में मध्य प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के चैनल पार्टनर्स शामिल हुए। इस दौरान संबंधित राज्यों के स्टेट हेड्स व उनकी टीम उपस्थित रही।

कम्पनी के डायरेक्टर – रिटेल एवं एग्रीबिजनेस स्ट्रेटेजिज



श्री दिव्यांश अग्रवाल ने अपने संबोधन में चैनल पार्टनर्स के मजबूत सहयोग की सराहना करते हुए उन्हें कम्पनी की विकास यात्रा की रीढ़ बताया। उन्होंने आधुनिक कृषि पद्धतियों और नवाचार पर निरंतर फोकस बनाए रखने का भरोसा दिया।

इस वर्ष की थीम ‘गति-26’ कम्पनी के आगामी रणनीति को दर्शाती है, जिसमें कम्पनी अपने चैनल पार्टनर्स के सहयोग से एक गति के साथ स्पष्ट दिशा, योजनाबद्ध

विकास और मजबूत मूल्यों के आधार पर विस्तार करेगी। यह थीम कम्पनी के इस वर्ष के दृष्टिकोण – तेज निर्णय, तेज नवाचार, तेज विकास को परिभाषित करती है।

अपने मुख्य संबोधन में कम्पनी के प्रेसिडेंट – सेल्स एवं मार्केटिंग, श्री ईश्वर रेड्डी ने गति-26 के दृष्टिकोण को विस्तार से रखा। उन्होंने कहा कि कम्पनी का लक्ष्य सिर्फ उत्पादों की बिक्री तक सीमित नहीं है, बल्कि

आधुनिक कृषि पद्धतियों के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाना और चैनल पार्टनर्स के साथ लंबे समय तक मजबूत और भरोसेमंद संबंध स्थापित करना है। उन्होंने यह भी बताया कि कम्पनी किसानों को सम्पूर्ण फसल समाधान उपलब्ध करवाने के साथ-साथ कृषि को अधिक लाभकारी और टिकाऊ बनाने की दिशा में निरंतर काम कर रही है।

14 नए उत्पादों का भव्य लांच

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण

14 अत्याधुनिक उत्पादों का लांच रहा, जिनमें कीटनाशक, खरपतवारनाशक, फफूंदनाशक, विशेष पोषक तत्व, बायो-सिटमुलेंट्स और जैव उर्वरक शामिल हैं। इनमें कम्पनी ने Triagen नामक एक अनूठा एवं पेटेन्टेड ‘कीटनाशक + फफूंदनाशी’ संयोजन उत्पाद भी लांच किया।

उत्पाद लांच का नेतृत्व श्री सुधांशु श्रीवास्तव (ग्रुप मार्केटिंग हेड), श्री कपिल कुमार (कंट्री हेड – AlgaEnergy), डॉ. आर. डी. सिंह (प्रेसिडेंट – रिटेल और स्पेशलिटी न्यूट्रिएंट्स) और श्री सुमित बनर्जी (जोनल मैनेजर – AlgaEnergy) संयुक्त रूप से कर रहे थे।

कार्यक्रम का समापन सम्मान समारोह और लकी ड्रॉ के साथ हुआ। इस आयोजन के माध्यम से कम्पनी ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया कि वह भारतीय कृषि क्षेत्र में नवाचार, सांझेदारी और किसानों की प्रगति के लिए प्रतिबद्ध है।

चुघ ट्रेडिंग कम्पनी बनी केमैक्स एनर्जी ‘सेल्स परफॉर्मर ऑफ द ईयर’, इंटरनेशनल इंजीनियर्स को लकी ड्रॉ में दूसरा पुरस्कार



मेसर्स चुघ ट्रेडिंग कंपनी, जलालाबाद (पंजाब) के मालिक श्री अजय कुमार को कृषज के प्रसिद्ध उत्पाद के-मैक्स एनर्जी के लिए ‘सेल्स परफॉर्मर ऑफ द ईयर’ खिताब से सम्मानित किया गया। वहीं, फाजिल्का स्थित मेसर्स इंटरनेशनल इंजीनियर्स को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए ‘राइजिंग स्टार अवॉर्ड’ से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान आयोजित लकी ड्रॉ में दूसरा पुरस्कार भी इंटरनेशनल इंजीनियर्स ने अपने नाम किया। इस अवसर पर पंजाब स्टेट हेड श्री जगदीप सिंह, रीजनल मैनेजर्स श्री राज कुमार कटारिया एवं श्री प्रीतपाल सिंह ने विजेताओं को बधाई दी और उत्साहवर्धन किया।

पश्चिम एशिया की जंग का असर कृषि क्षेत्र पर, किसानों की बढ़ेगी मुश्किलें

पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष का असर अब सीधे तौर पर पड़ने लगा है। वैश्विक स्तर पर तेल और गैस की कीमतों में तेजी के कारण खेती की लागत बढ़ने की आशंका है। भारत जो अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए खाड़ी देशों पर काफी हद तक निर्भर है, इस संकट से अछूता नहीं रह सकता। ऐसे में जाने वाले समय में किसानों को बढ़ती लागत और घटते मुनाफे की दोहरी मार झेलनी पड़ सकती है।

नीति और तैयारी की जरूरत

विशेषज्ञों का मानना है कि इस स्थिति से निपटने के लिए सरकार

को तुरंत कदम उठाने होंगे। खाद की उपलब्धता सुनिश्चित करना, कीमती को नियंत्रित करना और किसानों को राहत देना जरूरी होगा। साथ ही, दीर्घकालिक समाधान के लिए घरेलू उत्पादन बढ़ाने और मजबूत व्यापार नीति बनाने की जरूरत है।

पश्चिम एशिया की जंग ने एक बार फिर यह दिखा दिया है कि वैश्विक संकट का असर सीधे भारतीय खेती पर पड़ता है। ऐसे में किसानों की आय और आजीविका को सुरक्षित रखने के लिए मजबूत नीतिगत कदम उठाना जरूरी है, ताकि इस चुनौतीपूर्ण समय में कृषि

क्षेत्र को संभाला जा सके।

निर्यात पर भी असर

पश्चिम एशिया भारत के बासमती चावल और मसालों जैसे कृषि उत्पादों का बड़ा बाजार है। युद्ध के चलते इन देशों में मांग और आपूर्ति प्रभावित हो सकती है, जिससे भारतीय किसानों के निर्यात पर असर पड़ेगा। पहले से ही कृषि निर्यात में गिरावट देखी जा रही है और यह संकट इसे और बढ़ा सकता है।

आयात महंगा, महंगाई बढ़ने का खतरा

खाने के तेल और दाल जैसे उत्पादों के आयात पर भी इस युद्ध

का असर पड़ सकता है। भारत खाने के तेल का आधे से ज्यादा और दालों का बड़ा हिस्सा आयात करता है। कीमतों में बढ़ोतरी से आम जनता पर महंगाई का बोझ बढ़ेगा, जिसका अप्रत्यक्ष असर किसानों पर भी पड़ेगा।

खाद की कीमतें बढ़ने का खतरा

भारत अपनी यूरिया और कॉम्प्लेक्स खाद की जरूरतों के लिए बड़े पैमाने पर आयात पर निर्भर है। साऊदी अरब, ओमान, कतर और यू.ए.ई. जैसे देशों से आने वाली आपूर्ति में बाधा आने की आशंका है। इसके अलावा,

खाद के उत्पादन में इस्तेमाल होने वाले नेपथा और गैस की कीमतें भी बढ़ रही हैं, जिससे बाजार में खाद और महंगी हो सकती है।

ईंधन महंगा, खेती पर सीधा असर

एसोसिएट प्रोफ़ेसर जे.एन.यू. हिमांशु कहते हैं तेल और गैस की कीमतों में बढ़ोतरी का सीधा असर खेती पर पड़ता है। डीजल महंगा होने से ट्रैक्टर, सिंचाई और परिवहन की लागत बढ़ जाती है। इसके साथ ही गैस की कीमत बढ़ने से खाद उत्पादन भी महंगा हो जाता है, जिससे किसानों की लागत और बढ़ जाती है।